परमसंत पं. फकीर चन्द जी महाराज के सूत्र

1. इन्सान बनो। अपनी नीयत साफ रखो।
2. हमेशा आशावादी रहो।
3. सुमिरन मन को शांत करता है।
4. मन, वचन और कर्म से शुद्ध रहो।
5. अपने निजी स्वार्थ के लिए औरों को धोखा मत दो।
6. तुम्हारा शरीर हरिमन्दिर है, प्रभु स्वयं इसमें रह रहे हैं। उसको खोजो, वह अवश्य मिलेगा।
7. आत्मा और परमात्मा के मिलाप में मन ही रुकावट है।
8. मन को वश में कर लो, आत्मा स्वयं परमात्मा की ओर खिंची चली जाएगी।
9. सादा ज़िन्दगी और ऊँचे ख्याल रखो।
10. नफ़रत से नफ़रत को नहीं काटा जा सकता।
11. जो वायदा आपने किया है, उसे पूरा करो, यही मानवता है।
12. कर्म के कानून से कोई नहीं बच सकता।
13. जो सलूक आप अपने से नहीं चाहते, वह दूसरों से हरगिज मत करो।
14. अपना बोझ दूसरों पर डालने की कोशिश न करो।

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट

मानवता-मन्दिर, सुतैहरी रोड, होशियारपुर।

अजायब पुरुष
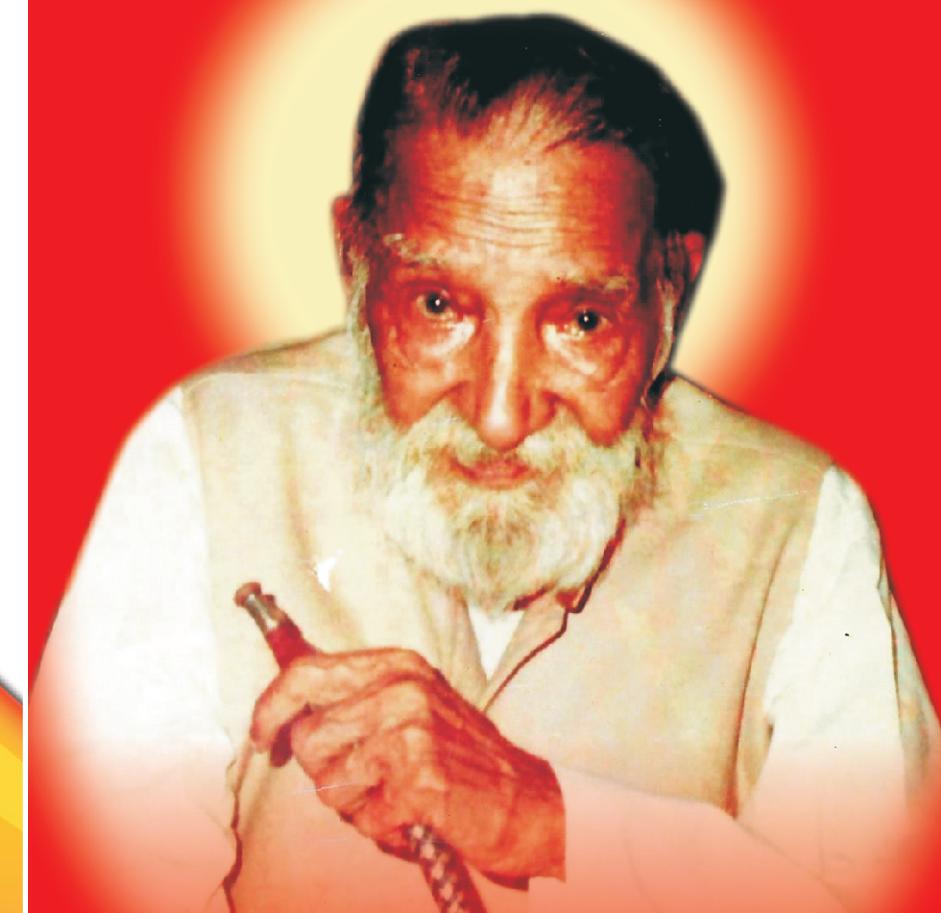
परमसन्त परमदयाल
पं. फकीर चन्द जी महाराज

अजायब पुरुष

परम संत परम दयाल फ़कीर चन्द जी महाराज

के प्रवचन जिसमें

अजायब पुरुष

की व्याख्या की गई है।

प्रकाशक :

फकीर लाइब्रेरी चैरिटेबल ट्रस्ट (रजि.)

होशियारपुर (पंजाब)

प्रथम संस्करण :
सं० 2027 वि०

द्वितीय संस्करण :
सं० शाका 2016

सर्वाधिकार
सुरक्षित

मूल्य :

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देव महेश्वरः
गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्रीः गुरुवे नमः

अजायब पुरुष

अन गढ़िया देवा, कौन करे तेरी सेवा॥

गढ़े देव को सब कोई पूजे, नित ही लावै मेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जाने भेवा।
दस औतार निरंजन कहिये, सो अपनो ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगें, करता औरहि कोई॥

ब्रह्मा विष्णु महेसुर कहिये, इन सिर लागी काई।
इनहिं भरोसे मत कोई रहियो, इनहूँ मुक्ति न पाई॥

जोगी जती तपी संन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद लखै सो तरिया॥

प्राक्कथन

भिन्न-भिन्न धर्म, सम्प्रदाय तथा पंथ वालों ने उस मालिक सर्वाधार को विभिन्न नामों से पुकारा है और उसकी प्राप्ति के अनेक उपाय बताये हैं मगर उनकी वाणियों में भिन्नता है अथवा एक दूसरे से विपरीत हैं इसलिए मनुष्य उस असली मालिक को जानने, समझने और उसके साक्षात्कार से वंचित रहा है। कोई बिरले भाग्यशाली होंगे जिनको उस परमपद की प्राप्ति हुई हो।

चूँकि महाराज जी को स्वयं उस मालिक के साक्षात्कार की लगन थी उन्होंने इसके लिए सारा जीवन योगाभ्यास में व्यतीत किया और आज जिस परिणाम पर पहुँचे हैं उसको इस पुस्तक में वर्णन किया है।

माना कि आज दुनिया भौतिकवाद की ओर तेजी से दौड़ रही है। लोग कर्त्तव्यपथ से विमुख हो रहे हैं, भ्रष्टाचार, दुराचार जोर पकड़ता जा रहा हैजिससे लोग दुखी भी हैं। परन्तु दूसरी ओर आध्यात्मवाद की धारा भी बह रही है। जब-जब धर्म की हानि होती है वह मालिक किसी न किसी रूप में संसार के दुखों को दूर करने के लिए प्रगट हुआ करता है।

आज वह परम शक्ति फकीर के चोले में संसार के कल्याण के लिये आई हुई है जो बिल्कुल स्पष्ट रूप से हर बात को प्रगट कर रही है। ताकि जीव अन्धकार में न रहे और उनको सीधा सच्चा मार्ग मिल जाये।

आशा है जो लोग इस पुस्तक को पढ़ेंगे, सोचेंगे, विचारेंगे, उनके भ्रम अवश्य दूर हो जायेंगे और यदि परमपद की प्राप्ति की लालसा होगी तो उस ओर भी सुगमता से पग बढ़ा सकेंगे।

– देवीचरण मीतल

परमसंत दयाल फकीर चन्दजी महाराज का श्री देवीचरण के नाम पत्र

देवी चरन!

राधास्वामी!

या तो मेरा दिमाग खराब है या मौज को मंजूर है। मैंने अपना जीवन सच्चाई की खोज में व्यतीत किया। जो कुछ समझ में आया गुरु ऋण से उत्तीर्ण होने के लिए या अपने कर्म भोग काटने के लिए किया है। क्या खबर! मैंने जो समझा है ठीक है या गलत है मगर अपनी नीयत से सत्य बात कहता हूँ यह अजायब पुरुष का लेख, जिसमें एक भूमिका और दो सतसंग है आपको भेज रहा हूँ। यदि आपका अन्त:करण मेरी सत्यता के प्रगट करने का हौसला करे तो इसको प्रकाशित कर देना। यदि अन्त:करण आज्ञा न दे तो प्रकाशित मत करना।

मैंने अपनी नीयत से संसार के कल्याण के लिए काम किया है। यह संसार सत्य पर कायम है– 'सत्यम् विजियते'। इस समय देश की क्या दशा है। कहीं है शान्त? हर जगह झगड़ा, घरेलू जीवन में, राष्ट्रीय जीवन में और धार्मिक जीवन में। गृहस्थी संसार की आशा में ग्रस्त होकर हेरा फेरी करते हैं। नीयत साफ नहीं रखते। पोलीटिकल लाईन वाले स्वयं हेराफेरी अपना राज्य कायम करने के लिए करते हैं। यह जो सन्तों-फकीरों का पथ था जिनसे यह आशा की जाती थी कि यह सत्यता का उपदेश देंगे मगर मेरा अनुभव है जो मैंने संत की पदवी या गुरु पद पर आकर प्राप्त किया, यदि यह ठीक है तो संतों का भी यही हाल रहा। इस दशा में सामाजिक, घरेलू, पोलीटिकल लाइन के रूप से चूँकि कहीं भी 'सत्यम् विजयते' नहीं है, देश अवश्य कष्ट को प्राप्ति होगा। चूँकि मेरे जिम्मे जगत-कल्याण की ड्यूटी है मैंने सच्चाई की घोषणा की। परिणाम की ओर मेरा ख्याल नहीं। अगर प्रकाशित करो तो मेरा यह पत्र भी प्रकाशित कर देना।

नोट– ऐ मेरे साहित्य के पढ़ने वालो! हो सकता है मेरा अनुभव गलत हो। मैं यह नहीं कहता कि मुझे लोग माने।

आपका **: फकीर**

भूमिका

भारत वर्ष के धर्म और पंथ के मानने वालो! मैं हिन्दू था। ब्राह्मण कुल में जन्म लिया। अपने आधार मालिक या आदि की खोज छोटी आयु से हुई। मन में इच्छा थी कि उसको मिलूँ, उसको देखूँ। यह धुन थी। चूँकि हिन्दू होने के कारण यह ख्याल मिला हुआ था कि वह अवतार लेता है एक दिन 24 घण्टे रोया कि उस मालिक को मानव रूप में मिलूँ, प्रेम करूँ, सेवा करूँ। सन् 1905 का मेरा एक दृश्य था जिसने यह विश्वास दिलाया कि मेरा मालिक या वह शक्ति दाता दयाल शिवव्रत लाल जी महाराज के रूप में आई हुई है। उनके चरणों में पहुँचा। अपनी भावनुसार उनसे प्रेम किया, सेवा की तथा आनन्द लिया। उन्होंने संत मत पर चलने का उपदेश दिया और उस मालिक को जैसा कि कबीर के शब्द में लिखा है–

अनगढ़िया देवा कौन करे तेरी सेवा

गढ़े देव को सब कोई पूजै, नित ही लावै मेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जाने भेवा।
दस औतार निरंजन कहिये, सो अपनो ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगें, करता औरहि कोई॥
ब्रह्मा विष्णु महेसुर कहिये, इन सिर लागी काई।
इनहिं भरोसे मत कोई रहियो, इनहूँ मुक्ति न पाई॥

जोगी जती तपी संन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद लखै सो तरिया॥

उसे अनगढ़िया देवा कहा है अर्थात् उसको किसी ने गढ़ा नहीं। मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मैंने दो सत्संग राधास्वामी दयाल की वाणी के आधार पर दिये हैं।

एक पुरुष अजायब पाया, कोई मरम न उसका पाया।
बिन संत हाथ नहिं आया, ऋषि-मुनि सब धोखा खाया॥

इस शब्द में भी स्वामी जी ने ऋषियों, मुनियों, पाराशर, वेद व्यास आदि का खंडन किया है और कबीर के शब्द में भी कहा गया है–

गढ़े देव को सब कोई पूजे, नित ही लावे सेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जाने भेवा॥

वह कहते हैं लोग सेवा करते है। जो असली पूर्ण ब्रह्म है उसका कोई भेद नहीं जानता। अगली कड़ी में कहते हैं–

दस अवतार निरंजन कहिये, सो अपनी ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगे, करता औरहि कोई॥

यदि मैंने दीवाना बनकर उस अजायब पुरुष या अन गढ़िया देवा की खोज में आयु व्यतीत कर दी तो क्या मैं सत मार्ग पर नहीं था। मैं खोज करने को विवश था। मैं तो उस मालिक को मानता था यद्यपि जानता नहीं था। मुझे कुदरत ने एक विश्वास दिलाया था कि तेरा मालिक तेरे लिये, महर्षि शिव के रूप में आया हुआ है। उन्होंने मालिक से मिलने के लिए यह संतमत की शिक्षा दी। जब खंडन की बातें सुनता या पुस्तकों में पढ़ता तो पुराने विश्वास को धक्का पहुँचता और उदासी आ जाती मगर

चूँकि मेरा विश्वास दाता दयाल पर था, उन्होंने संत मत को सबसे ऊँचा बताया था। तो मैं जीवन में देखना चाहता था कि वह अनगढ़िया देवा या अजायब पुरुष कौन है। क्या है? कहाँ रहता है? और उसको कैसे मिलूँ?

मैं दाता दयाल को अज्ञान वश या प्रेम वश तंग किया करता था। उन्होंने दया कर दी कि मुझे गुरु पदवी दे दी। जब से यह ख्याल आया कि लोगों के अन्तर मेरा रूप जाग्रत में, स्वप्न में, समाधि में प्रगट होता है और उनके कार्य कर जाता है, मगर मैं नहीं होता तथा मुझे कोई पता नहीं होता तब मुझ को स्वामी जी तथा कबीर जी का विश्वास आया कि इस संसार में हम समस्त धर्म तथा पंथ वाले सिवाय विशेष व्यक्तियों के, सब गढ़े हुये देव की पूजा करते हैं।

मंदिर में मूर्ति है वह गढ़ी हुई है। मनुष्य है वह भी कुदरत ने गढ़ा हुआ है या पैदा हुआ है। राम का भी शरीर था। कृष्ण का भी शरीर था। ये सब गढ़े गये थे। बाह्य गुरु का शरीर भी गढ़ा हुआ है चाहे कबीर का था या स्वामी जी का या अथवा गुरु नानक का। बस! इस एक ख्याल ने मुझको विवश किया कि उस अनगढ़े हुये देव को ढूँढू।

जितने भी रूप-रंग, विचार भाव मेरे अन्तर में पैदा होते थे वह क्या सिद्ध हुये? गढ़े हुये। मेरे अन्तर जो रूप बनता है चाहे वह दाता दयाल का है, राम का है अथवा किसी और का, वह मेरे मन का गढ़ा हुआ है। मेरे ही संकल्प से पैदा हुआ है। यदि कोई आशायें उठती हैं या वासनायें उठती है वह भी मेरी ही गढ़ी हुई हैं। फिर वह मालिक कहाँ है? वह है वहाँ जहाँ पिंड नहिं, देह नहीं क्योंकि देह तो गढ़ा हुआ है। वह मन नहीं क्योंकि मन के अन्तर जो संकल्प उठते हैं वह गढ़े हुये हैं। वह ब्रह्माण्ड भी नहीं है। सूर्य, चन्द्र, सितारे, शिव लोक, विष्णु लोक यह भी बनाये

ही गये हैं। फिर उनके परे क्या है? उसके परे हैं केवल एक तत्व (सुपर मोस्ट एलीमैन) परम तत्व। वह क्या है, क्या नहीं, किसी की शक्ति नहीं जो उसे जान सके। न वह बुद्धि में आता है न मन में आता है। न वह चित्त में आता है न अहंकार में आता है। उसके होने का कोई अनुभव कर सकता है तो केवल पिंड, अंड, ब्रह्माण्ड के पार जाने पर कर सकता है।

पिंड अंड ब्रह्माण्ड से पारा।
वह है खसम हमारा॥

जब तक कोई शरीर, मन और ब्रह्माण्ड को नहीं भूलेगा उसको उस अनगढ़िया देश का या अजायब पुरुष का अनुभव नहीं हो सकता। मुझको तो यह अनुभव हुआ कि वह मालिक जिसकी मैं खोज करता था वह यह है। मैं उन संतों के साथ सहमत होने के लिए विवश हूँ जैसे कबीर, स्वामी जी; उन संतों के साथ नहीं जो जन साधारण को यह कहते हैं कि अन्त समय बाहर का सतगुरु आकर तुमको उस घर पहुँचा देगा। यह संत नहीं, महापुरुष है। क्यों? क्योंकि यह जितने धर्म पन्थों के आचार्य हैं, यह निर्बल, अबल और अज्ञानी जीवों को एक सहारा देते हैं। उनको एक प्रकार की संतुष्टि मिलती रहती है। इसलिए ऐसे संतों को जो इस प्रकार की बातें कह कर जीवों को सहारा देते हैं-महापुरुष कहता हूँ,दयावान कहता हूँ मगर इस प्रकार की अनेक विचारधाराओं के देश में होने से मानव जाति असलियत को न समझ कर विभिन्न धर्म, पन्थ, सम्प्रदायों में बँट गई। कोई हिन्दू बना, कोई सिख बना, कोई मुसलमान बना, कोई जैनी, ईसाई, कोई नानक पंथी, कोई राधास्वामी पंथी बना। परिणाम क्या हुआ? यह योगी, हर मत मतान्तर वाले आपस

में लड़ते झगड़ते रहते है, द्वेष रखते हैं। उनमें अपना परायापन है। उन्होंने तो एक झूठा सहारा दिया था। उस सहारे की जो शान्ति थी वह तो छूट गई और आपस में गुत्थम-गुत्था होने लगे। यह कबीर का कथन है-

जोगी जती यती सन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, शब्द लखे सोई तरिया॥

संतों की अभिव्यक्ति (जहर) कलयुग में केवल सच्चाई को वर्णन करने और भारत वर्ष के जो धार्मिक पक्षपात हैं, द्वेष हैं, उनको मिटाने के लिए हुआ।

सतगुरु त्रेता द्वापर बीता।
काहू न जानी शब्द की रीता॥
सब में अज्ञान का भास हुआ।
कलियुग में स्वामी दया विचारी।
परगट करके शब्द पुकारी।
विद्या सत ज्ञान का भास हुआ॥

कौन स्वामी? वह जिन्होंने वह जिन्होंने अनगढ़िया देव का अनुभव किया है। उन्होंने कलियुग में दया विचारी और स्पष्ट कह दिया कि अपने असली घर या आदि को ढूँढना चाहते हो तो जितने तुम्हारे अन्तर रूप रंग, विचार भाव उठते हैं यह सब माया है और काल हैं और इससे परे तुम्हारा देश है। यदि वहाँ तक, अनामी धाम या अकाल गति तक जाना चाहते हो तो शब्द ब्रह्म को पकड़ो, नाम को पकड़ो। यह कहने के लिए स्वामी जी ने कलियुग में दया विचारी अर्थात् सच्चा ज्ञान, सच्ची विद्या या सच्चे रहस्य को प्रकट कर दिया। मेरे जिम्मे दातादयाल (महर्षि शिव) ने जगत कल्याण और निबल अबल और अज्ञानी जीवों की

सहायता करने की ड्यूटी लगाई थी। मैंने उस कर्त्तव्य को पूरा करने के लिए अपने जीवन में यह काम किया और यह 'अजायब पुरुष' नाम की पुस्तक उस मेरे कर्त्तव्य की एक किश्त है।

देखो! इस अज्ञान के कारण कि तुम्हारे अन्तर कोई गुरु प्रकट होता है, तुमको अन्त समय में ले जाता है, क्या भोलेभाले गृहस्थी संसार की आशाओं में फँसे हुये लुटे नहीं जा रहे? क्या इन धर्म सम्प्रदाय वालों ने भोले-भाले गृहस्थियों को सत्यता वर्णन न करके और अज्ञान में रख कर उनकी सम्पति नहीं लूटी? इस विचार से मैंने यह सत्यता का डंका बजाया है ताकि जीव लुटे नहीं और इनको सत्यता का ज्ञान हो जाये।

यदि तुम निष्काम होकर किसी की सेवा करते हो, भूखे को रोटी प्यासे को पानी, रोगी को दवा तथा अज्ञानी को ज्ञान देते हो, वह तुम्हारा दान तुम्हारे लिये महा-कल्याणकारी है और यदि तुम इस ख्याल से कि बाबा फकीर हमारे अन्तर प्रगट होता है, उसका रूप अमुक को मरते समय ले गया और तुम यह आशा करके वह तुम पर भी दया कर दे और तुम यह दान मुझको देते हो, मेरी सेवा करते हो तो वह तुम्हारा दान नहीं है, क्योंकि तुम अपने स्वार्थ के लिए दान देते हो। वह स्वार्थ तुम्हारा अज्ञान का है। जो महात्मा ऐसा दान लेते हैं वह स्वयं डूबे हुये हैं। जो महात्मा गृहस्थियों से गुप्त रूप से यह बताकर कि हम ले जायेंगे तुमको मरते समय सतलोक में, दान लेते हैं वह सामाजिक तथा आध्यात्मिक रूप से गलती पर है।

मैं इस कलियुग में अनामी धाम से फकीर के चोले में आया हूँ केवल इस सत्यता को प्रगट करने के लिए। दाता दयाल महर्षि शिव मेरे बारे में लिख गये हैं-

तेरा रूप है अद्भूत अचरज, तेरी उत्तम देही।
जग कल्याण जगत में आया, परम दयाल सनेही॥

मैं यह काम कर चला हूँ। मेरी छोटी सी पुस्तक पब्लिक में प्रस्तुत की जा रही है जिनके भाग्य में है वह पढ़ें, सोचें, मनन करे और लाभ उठायें। कोई यह न समझे कि मैं दान के विरुद्ध हूँ। जो देता नहीं, उसे मिलता कुछ नहीं। यह जितने काम इन महापुरुषों ने किये है जैसे व्यास, आगरा, निरंकारी, स्वर्गआश्रम, हरिद्वार, यह धन्य है। मैं इन का खंडन नहीं करता। मैंने भी तो मानवता मंदिर बनवाया हुआ है। जिस देश में हम रहते हैं, हम एक दूसरे के आश्रित हैं। पब्लिक सेवा होनी चाहिये। यदि कोई यह कहे कि केवल मानवता मन्दिर में चार कमरे बना दो तो बाबा फकीर प्रसन्न होकर, फूँक मार सतलोक पहुँचा देगा तो वह झूठ है और पाखंड है। सतलोक में तो तुमको स्वयं पहुँचना है। किसी महापुरुष की बात को सुनकर, समझ कर, गुन कर और अपनी सुरत को मन, चित्त, बुद्धि और अहंकार से या दसवें द्वार से परे ले जाओगे, तब तुम सतलोक जाओगे। किसी बाबा फकीर अथवा किसी दूसरे ने तुमको सतलोक नहीं ले जाना। तुमको इन महापुरुषों ने सच्ची बात बतानी है सच्चा भेद देना है। यदि तुम उनके सत्संग में बैठकर इस भेद को प्राप्त कर लो और फिर अपने मन के संकल्प, विकल्पों, रूप रंगों से परे जो नाम है–

नाम रहे चौथे पद माहीं।
यह ढूँढें त्रिलोकी माही॥

उस नाम को प्राप्त करो। जब तक इस नाम को पकड़ोगे कहीं, तुम

इस भव के चक्र से निकल नहीं सकते। हाँ, रूप के प्रकट हो जाने से अन्त समय में चाहे वह राम का रूप हो, चाहे गुरु का हो, चाहे देवी देवता का हो, इस से तुम यमराज से बच जाओगे। फिर दूसरा अच्छा सुन्दर चोला मिल जायेगा। फिर किसी सत्पुरुष के साथ तुम्हारा मेल होगा। यह भेद है जिसको प्रगट करने के लिए मुझ पर एक कर्त्तव्य था, ऋण था, वह मैं पूरा कर चला। मैंने माँ-बाप का ऋण उतार दिया, गुरु ऋण भी उतार दिया।

मैं सच्चाई पसंद मनुष्य होने के नाते अपने सच्चे हृदय से अपने जो ट्रस्ट के मैंबर है, सैक्रेटरी हैं, प्रेसीडेंट हैं इन के लिए चाहता हूँ कि इनका यह जन्म सफल हो क्योंकि इन्होंने मेरे पर अहसान किया है कि मुझको अपना ऋण चुकाने के लिए इन्होंने मेरी सहायता की है। शुभ भावना देता हूँ। यह ज्ञान जो मैंने प्राप्त किया है, वह देता हूँ।

– फकीर

अजायब पुरुष

(प्रवचन–मानवता मन्दिर होशियारपुर 17-4-70)

आज सत्संग में यह शब्द पढ़ा गया–

इक पुरुष अजायब पाया, कोई मर्म न उसका गाया।
बिन संत हाथ नहिं आया, ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥
क्या व्यास वशिष्ठ भुलाया, क्या शेष महेश भ्रमाया।
पारासर जोगी नारद, श्रृंगी ऋषि गोता खाया॥
हम कहें कौन समझाई, परतीत न कोई लाया।
संतन यह भाख सुनाया, कोई गुरु मुख बूझ बुझाया।
घट घट में काल समाया, श्रुति स्मृति जाल बिछाया॥
षट शास्तर बुद्धि चलाया, अघे मिल धूल उड़ाया।
कुछ हाथ न उनके आया, बिन सतगुरु भटका खाया॥
सतन वह देश जनाया, तब तुच्छ जीव भी पाया।
नीचों को घट लगाया, ऊँचों को काल बहाया।
राधास्वामी पता बताया, खोजी की कमर बँधाया॥

मैं छोटी आयु से ही उस मालिक को मिलने की लालसा में निकला था। हिन्दू धर्म के संस्कारों के अनुसार उसको राम, कृष्ण, ईश्वर परमात्मा या ब्रह्म आदि मानकर पूजा करता था। इस खोज के क्रम में सन् 1905 में मेरा कर्म या मौज मुझको दातादयाल महर्षि शिवब्रतलाल जी महाराज के चरणों में ले गई। उन्होंने राधास्वामी मत का नाम देकर इस लाइन पर उस मालिक को मिलने के लिए यह संस्कार दिया था।

मैंने प्रण किया था कि अपना अनुभव कह जाऊँगा। मैं यह नहीं कहता कि मैंने उस पुरुष को पा लिया।

हाँ, जो कुछ मैंने अनुभव किया उसके प्रगट करने का मुझे अधिकार है। स्वामी जी पारासर वशिष्ट आदि को अधूरा कहते हैं मगर मैं किसी को अधूरा नहीं कहता और न पूरा कहता हूँ। मैंने जो समझा वह कहता हूँ। वाणी है–

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया॥
बिन संत हाथ नहीं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

वह कहते हैं कि ऋषि मुनियों ने धोखा खाया। वाणी में जो कुछ लिखा है वह है तो सत मगर वह जिस ढंग से वर्णन किया गया है यह संसार में द्वेष और घृणा उत्पन्न करता है, पक्षपात उत्पन्न करता है। लोग गलती से टेकी हो जाते हैं, जिस प्रकार इस समय लोग टेकी हो गये हैं। जो राधास्वामी मत में हैं उनको भी उस पुरुष का पता नहीं लगा मगर दूसरों का खंडन करते हैं। मुझे जो पता लगा वह बताता हूँ कि ऋषि मुनि क्यों धोखा खा गये।

हर एक धर्म, पंथ और सम्प्रदाय वाला उस पुरुष का कोई न कोई रूप मानता है। कोई साकार मानता है कोई निराकार मानता है। जितने मत मतान्तर है सब उसको कुछ न कुछ मानते हैं। उसको मानने के लिये कोई न कोई रूप बताते हैं। कोई उसको साकार बताकर राम के रूप में मानता है, कोई कृष्ण के रूप में, कोई देवी के रूप में, कोई किसी गुरु के रूप में मानता है। कोई उसको शून्य कहता है, कोई निराकार। कुछ न

कुछ मानते हैं। मेरे अनुभव में आया है कि जो कुछ भी कोई उसको मानता है, जो कुछ कोई उसको समझता है कि वह यह है, वह वह नहीं है। मैं ऐसा क्यों कहता हूँ? मैंने अपना अनुभव बहुत कुछ वैसाखी के सत्संग पर कहा। जैसे सन्त ताराचन्द ने कहा कि मैंने उसके चने सारे दिन धूप में काटे मगर मैं तो था नहीं अथवा जो यह कहते हैं कि बाबा! तू मरते समय ले गया या गिरीश की तरह कहते हैं जिसका कि मैंने उदाहरण दिया था कि चन्द्रमा के सात मील के घेरे में देवताओं में बीच में रहते हुए उसने देवताओं को देखा और मैं भी वहाँ था। चूँकि मैं वहाँ नहीं था इसलिए मैं इस सिद्धान्त के अनुसार मानने को तैयार हूँ कि जो यह कहते हैं कि वह वह है वह धोखा खा गये।

यह अनुभव जो मुझको हुआ, उसके आधार पर यदि यह कह दूँ कि जो कुछ यह लिखा हुआ है ठीक है तो मैं गलत नहीं हूँ। जब मेरा रूप दूसरों में प्रकट होता है उनके काम करता है और मैं नहीं होता तो इससे सिद्ध हुआ कि जो कुछ भी किसी ने माना कि वह वह है वास्तव में जो कुछ उसने देखा वह वह नहीं था। वह उसका अपना ही मन था। वही काल है। यह उसकी अपनी ही आत्मा थी। उसका अपना ही ख्याल था। इसलिए मैं कहता हूँ कि ऋषि-मुनि सबने धोखा खाया। जो व्यक्ति यह कहता है कि वह, वह है उसको कोई रूप बताता है, वह वह नहीं है। वह तो जिसने जो कुछ देखा, जो कुछ माना, वह सब उसके अपने ही अन्तर का एक तमाशा था और उसने लोगों को यह कह दिया कि वह, वह है। इसलिए मैं स्वामी जी की वाणी के साथ सहमत हूँ कि वह पुरुष क्या है? वह कहते हैं-

इक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका पाया॥

बिन संत हाथ नहीं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

इसलिए मैं कहता हूँ। मैं ऋषियों-मुनियों का नाम नहीं लेता हूँ। मैं उनका नाम लेता हूँ जो यह समझते हैं कि वह वह है। जो यह कहता है कि वह निराधार है वह भी धोखे में है। जो यह कहता है कि वह प्रकाश है या शब्द है वह भी धोखे में है। जो यह कहता है कि मेरे अन्तर अमुक गुरु प्रगट होता है वह भी धोखे में है।

तुम कहोगे मैं क्या कहता हूँ? मैं शब्द को सुनता हूँ। शब्द किसके अन्तर में निकलता है? मेरे शरीर के अन्तर से निकलता है। प्रकाश कहाँ से निकलता है? मेरे मस्तिष्क के अन्दर से निकलता है। मन कहाँ से निकलता है? मेरे दिमाग के अन्दर से निकलता है। तो फिर वह पुरुष कौन है? वह पुरुष वह है जिसके अन्तर से शब्द, प्रकाश और मन निकलते हैं। जिसके अन्तर से यह सारी सृष्टि निकलती है वह क्या है? वह है पुरुष, वह है परम तत्त्व जिसके विषय में कोई कुछ नहीं कह सकता। जिभ्या गूँगी है। उसको कहते हैं अकह, अगाध अपार और अनामी। उसका न कोई रूप है न रंग है। न वह शब्द है न प्रकाश। न वह यह है व वह है, वह है क्या? जिसने उसको समझ लिया वह चुप कर गया। मैं ऐसा समझता हूँ।

स्वामी जी ने यह वाणी क्यों लिखी? यह उनको पता होगा कि उन्होंने क्या कुछ पाया? मुझे ज्ञात नहीं। मैं जिस मालिक की खोज करने निकला था कि वह मेरा मालिक कहाँ है, उस मालिक को मैंने क्या समझा? वह अकह है, अगाध है, अपार है अनाम है। न वह शब्द है न प्रकाश है न वह मन है न वह सहस्र दल कंवल है, न वह त्रिकुटी, सुन्न, भंवर गुफा है। न सत है न वह अलख है न अगम है। वह है क्या? वह अनामी है।

अकह अपार अगाध अनामी।

जो सन्त होता है जिसे परम सन्त कहा जाता है वह अनामी धाम से आता है और वही अनामी धाम या असली घर का पता देता है क्योंकि मुझको तो अब निश्चय हो गया था जिसकी खोज में मैं निकला था वह क्या है? ....था। जो रूप तुम्हारी सहायता करता है .... मेरा रूप मदद करता है और मैं नहीं होता। .... बनाया हुआ है।

दूसरा कहता है कि वह निराकार है। कोई बाबा फकीर की आत्मा को प्रेम करता है या प्रार्थना करता है। कई आदमी फकीर का ख्याल करके दुआ माँगते हैं। यद्यपि मेरा रूप उनके सामने नहीं आता मगर उनकी प्रार्थना पूरी हो जाती है और मैं होता नहीं। जब इन श्रेणियों से गुजरा तब ही तो मैंने इस बैसाखी के सत्संग में सत्संगियों को अपना सतगुरु कहा, क्योंकि सतगुरु से मुझको ज्ञान मिला। उस पुरुष का पता चला। विश्वास हो गया कि वह पुरुष क्या है? फिर सोचता हूँ कि इस पंथ को चलाने की आवश्यकता क्या थी? केवल यह कि उस मालिक के ख्याल को लेकर जिन ऋषियों, मुनियों, पीरों ने धर्म चलाये हैं वह स्वयं धोखे में थे और दुनिया को विभिन्न धर्म, सम्प्रदाय, विभिन्न विचार धाराओं में लोगों को डाल दिया और मानव जाति बँट गई। केवल इस द्वेष और गैरियत को दूर करने और सच्चाई वर्णन करने के लिए इस कलियुग में सन्त आते हैं ताकि मानव जाति को उस मालिक या परमात्मा के विषय में जो विचार दुनिया में फैलाये गये हैं, यह दूर हो जाये। इसलिए मैं कहता हूँ कि जितने भी उस मालिक के किसी न किसी रूप में मानने वाले हैं वह सब के सब धोखे में हैं। जो प्रमाण मैंने दिया है कि सब ने धोखा खाया वह गलत नहीं है। वह तो शरीर के

कारण हमको ज्ञात होते हैं, है तो सब कुछ तुम्हारे शरीर के अन्तर में मगर जो असली वस्तु है, असली मालिक है वह उस शरीर के परे है, जहाँ नर रचना है न सूर्य न चन्द्र। वहाँ कुछ भी नहीं है। कबीर ने ठीक कहा है–

सखिया वा घर सबसे न्यारा, जहँ पूरन पुरुष हमारा।
जहाँ नहिं सुख दुख साँच झूठ नहिं, पाप न पुन्न पसारा।
नहिं दिन रैन चाँद नहिं सूरज, बिना ज्योति उजियारा॥

नहिं तहँ ज्ञान ध्यान नहिं जप तप, वेद कितेव न बानी।
करनी धरनी रहनी गहनी, यह सब वहाँ हिरानी॥

धर नहिं अधर न बाहर भीतर, पिंड ब्रह्माण्ड कछु नाहीं।
पाँच तत्व गुन तीन नहीं तहँ, साखी सब्द न ताहीं॥

मूल न फूल बेलि नहिं बीजा, बिना वृच्छ फल सोहै।
ओअ सोहं अर्ध उर्ध नहिं, स्वासा लेखन कोहै॥

नहिं निर्गुन नहिं सर्गुन भाई, नहिं सूच्छम अस्थूल।
नहिं अच्छर नहिं अवगत भाई, ये सब जग के भूल॥

जहाँ पुरुष तहवां कछु नाहीं, कहै कबीर हम जाना।
हमरी सैन लखे जो कोई पावै पद निरवाना॥

कबीर ने यह शब्द कह तो दिया मगर रहस्य नहीं खोला। स्वामी जी ने शब्द तो लिख दिया 'एक पुरुष अजायब पाया' मगर कोई कैसे उसे पा सकता है इसका पता नहीं बताया। उसको पाने के लिए केवल तीन बातें उन्होंने कह दीं– किसी संत सत्गुरु का सत्संग, उसके वचन और संत सतगुरु का पूर्ण होना आवश्यक है। इस समय तक जीवों को उस घर तक पहुँचने के लिए या उस मालिक का पता देने के लिए राधास्वामी मत में तीन चीजें आवश्यक हैं। शब्द की पहली कड़ी है–

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया॥

बिन संत हाथ नहिं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

फिर पिछले समय में उन सन्तों ने जिन्होंने कहा कि हाथ नहीं आया, भेद को खोला नहीं। केवल किसी-किसी को जैसे धर्मदास को बता दिया तो उसके मुँह में गट्टा दिया कि अब तू किसी को न बताना–

धर्मदास तोहि लाख दुहाई।
सार भेद नहिं बाहर जाई॥

स्वामी जी ने भी कहा–

संत बिना कोई भेद न जानें।
पर वह तोहि कहें अलग से॥

जब तक मनुष्य को ज्ञान नहीं होता कि असली मालिक क्या है तब तक उसके मन की कुरेद समाप्त नहीं होती और वह ढूँढता रहता है। फिर इस खोज को समाप्त करके घर पहुँचाने के लिए सन्तों के मार्ग में क्या तरीका है? उन्होंने देश नियत किये हुए हैं। एक माया देश, एक काल देश और एक दयाल देश और इसके परे वह मालिक है। माया देश से कैसे निकलें, यह किसी ने नहीं बताया मैं स्वयं नहीं निकल सकता था। माया देश से मैं निकला तो नहीं और जब तक शरीर है तब तक माया देश भी है, काल देश भी है और दयाल देश भी है मगर अब माया का देश मुझे भरमा नहीं सकता। माया देश मुझको फँसा नहीं सकता। माया का देश क्या है? हम जितने संकल्प-विकल्प, सोच-विचार बुद्धि से करते रहते हैं, यह माया देश है। जिसकी जितनी माया है, जैसा जिसका संकल्प है जितनी शक्ति जिसके संकल्प में है, उस शक्ति के अनुसार वह

अपने माया देश के जीवन को श्रेष्ठ बना सकता है। यह मनोमय जगत है या संकल्पमय संसार है। जिस तरह से सन्त ताराचन्द या दूसरे आदमी अपनी इच्छा को तीव्र करके मेरे रूप द्वारा अपना काम करा लेते हैं ऐसे ही ऋषियों के मार्ग में इस माया देश में कानून है आशावादी रहना, शिव-संकल्प रखना क्योंकि जैसा तुम्हारा ख्याल होगा वैसी तुम्हारी दुनिया बनेगी।

माया देश में सुख से रहने के लिए वेद मत है– 'शिव संकल्प मस्तु' शुभ विचार रखो। आशावादी होकर रहो। जैसी-जैसी तुम्हारी वासनायें हैं उसी के अनुसार माया देश का जीवन बन जायेगा।

यह काल है जो संसार को रचता है।

काल ने रची त्रिलोकी सारी।

यह जितनी ब्रह्माण्ड है, जितना माया देश बना हुआ है-स्थूल और सूक्ष्म, इसको बनाने वाला कौन है? काल! काल उसे कहते हैं जो रचना करता है। इस संसार में यदि सूर्य या तारागणों का प्रकाश न हो तो दुनिया नहीं बन सकती। इसी तरह से जो काल के ऊपर का देश है उसमें से प्रकाश और किरणें न आयें तो न सूर्य बन सकते हैं न चन्द्रमा और न पृथ्वी। कुछ नहीं बन सकता।

जब से मुझे यह ज्ञान हुआ कि मैं तो लोगों के अन्तर नहीं जाता तो मुझे यह विश्वास हो गया कि यह सारी दुनिया का हर एक के अपने ही संकल्प ही है, अपनी ही वासना है। चूँकि मैं तो आया था घर जाने के लिए, इसलिए मैं विवश हो रहा हूँ, होता रहता हूँ कि इस संकल्प की दुनिया को छोड़ कर प्रकाश की दुनिया में चला जाऊँ। पार ब्रह्म के देश में चला जाऊँ जो प्रकाश का समुद्र है प्रकाश का भंडार है। वह देश है मगर वह मालिक नहीं है। उस प्रकाश को हम मालिक नहीं मान सकते।

क्यों? क्योंकि प्रकाश में जब मेरे अन्तर ज्योति जलती है या होती है तो उसको देखने वाली कोई और वस्तु है। जब मैं अपने-आपको प्रकाश में देखता हूँ, मेरे सामने प्रकाश आता है तो देखने वाली कोई अन्य वस्तु और जो वस्तु मुझे दिखाई आ रही है अर्थात् प्रकाश, वह और वस्तु है। जब से यह ज्ञान हुआ यद्यपि मैं प्रकाश में सफर करता रहता हूँ, मगर उस वस्तु की खोज करता रहता हूँ जो प्रकाश के परे है।

कौन वस्तु है जो प्रकाश को देखती है? प्रकाश के आगे शब्द है। शब्द को दयाल देश कहते हैं। दयाल देश इसलिए है कि शब्द में जब तुम्हारी सुरत चली जाती है वहाँ एक तो रचना नहीं होती। प्रकाश का काम तो रचना करना है और फैलना है। तुम यहाँ रात को दीपक जला दो। उसका प्रकाश फैलता है। उसको रोक नहीं सकते। उसका गुण, कर्म, स्वभाव ऐसा ही है तो प्रकाश से आगे है दयाल देश जो शब्द का भंडार है। जब सुरत शब्द में चली जाती है, शब्द को सुनती है उस समय न तो माया देश रहता है न संकल्प और वह शक्ति भी समाप्त हो जाती है जो रचना करती है। जो वस्तु शब्द को सुनती है उस समय न तो माया देश रहता है न संकल्प और वह शक्ति भी समाप्त हो जाती है जो रचना करती है। जो वस्तु शब्द को सुनती है वह अनामी धाम से आई हुई है। हम तुम सब जीव अनामी धाम के अंश है मगर इस काल और माया से निकलने का रास्ता क्या है? संत की संगत में जाओ। वह तुमको रास्ता बतायेगा, भेद देगा कि भाई! यदि तू उस पुरुष को पाना चाहता है या सदा के लिए इस काल के चक्र से निकलना चाहता है तो इस रास्ते से चल।

मन महा चंचल है। दुनिया वालों को दुनिया की आशायें नहीं छोड़ती। जिनको दुनिया की आशाएँ नहीं छोड़ती उनके लिए यह वर्णात्मक नाम का सुमिरन है ताकि मन अजपा जाप करते हुए संकल्प न उठाये। इसलिए तुमको सुमिरन दिया जाता है। सुमिरन तो पहिली सीढ़ी

है। सुमिरन ही इष्ट पद नहीं है। ध्यान की शक्ति है। ध्यान भी इष्ट पद नहीं है। केवल मन की वृत्तियों को एकाग्र करने के लिए है।

देखा! कल यहाँ पर कृषक (श्री गोपीलाल अलीगढ़ वासी) बैठा हुआ था। तो मैंने कहा भाई! अपने अहंकार को तोड़ने के लिए तू मेरा ध्यान दे दिया कर। अपना ध्यान बतायेगा तो तुझमें अहंकार आ जायेगा अन्यथा चाहे तुम मेरा ध्यान करो चाहे कृषक का ध्यान करो, चाहे गुरु का करो, चाहे राम का करो। जो भी ध्यान करोगे, उससे जब ध्यान दृढ़ हो जायेगा तो तुम मन से निकल जाओगे। पंथ को कायम रखने व गद्दियाँ बनाने के लिए इस प्रकार का ख्याल दिया गया है या दूसरों का प्रेम का भाव होता है। इस कारण वह गुरु का ध्यान बता देते हैं। तुम किसी का भी ध्यान करो, यदि तुम्हारा प्रेम और श्रद्धा है तो वही लाभ बाबा फकीर के रूप के ध्यान करने से तुमको मिल जायेगा, वही लाभ कृषक के रूप के ध्यान करने से मिल जायेगा। यह सब भ्रम और दुनिया का जाल है। असली वस्तु न ध्यान करने वालों को मिलती है न विचार वालों को मिलती है। यही स्वामी जी ने कहा है। यही कबीर का कथन है कि वहाँ ध्यान नहीं है, वहाँ ज्ञान नहीं है, जप तप नहीं है, वहाँ तीर्थ नहीं है। यह है इसका अभिप्राय जो मैंने समझा है।

मैंने सिद्ध कर दिया कि ऋषि मुनियों ने कैसे धोखा खाया। असलियत से अनजान थे क्योंकि किसी ने साकार कहा, किसी ने निराकार बताया। किसी ने कहा शब्द योग सीखो, किसी ने ध्यान योग बता दिया। यह जितने भी योग है यह साधन मात्र है। इष्ट पद नहीं है। दुनिया में रहते हुये इस माया देश में 'शिव संकल्पमस्तु' हमारे लिये लाभदायक है। काल देश में प्रकाश हमारी सहायता करता है। दयाल देश में शब्द हमारा सहायक है मगर जहाँ हमने जाना है वहाँ न शब्द है न वहाँ प्रकाश है। वहाँ क्या है-

जिन जाना तिन भल पहिचाना।

वह हमारा निज स्वरूप (जात) है। वहाँ हमारा अनामी देश है जहाँ से हम आये हैं। रहते तो तुम उसी में हो। मुझे उस घर की खोज थी। दाता दयाल मिल गये जिन्होंने मुझे खेल खिलाया और गुरु पदवी देकर मुझको इस वाणी के सत्य होने का निश्चय करा दिया।

क्या व्यास वशिष्ट भुलाया।
क्या शेष महेश भरमाया॥
पारासर जोगी नारद।
श्रंगी ऋषि गोते खाया॥

यह शब्द ऐसे हैं जिनको मैं छोटी अवस्था में पढ़ा करता था तो मेरे कलेजे पर छुरी चला करती थी। ब्राह्मण होने के नाते मुझ को इनकी टेक थी। मैंने प्रण किया था कि मैं इस रास्ते पर चलूँगा और जो कुछ मुझे मिलेगा बता जाऊँगा। आज मैं कहता हूँ कि जो कुछ स्वामी जी ने कहा है वह अक्षरस: सत्य है, क्यों? क्योंकि इनमें से किसी ने भी अनामी धाम का पता नहीं दिया। यदि कहीं शास्त्रों में दिया तो ऐसा दिया कि किसी को पता न चला। वह कहते हैं कि सबसे पहिले असत ने सत को ढक रखा था। वह सत क्या है? व्यक्त (शब्द प्रकाश) रचना। असत क्या है? जिसमें सब रचना पहिले से लय थी। वह जो असत है, मैं उसको अनामी धाम कहता हूँ। मैं नहीं मानता कि ऋषि इसके जानने वाले नहीं थे मगर चूँकि वे वर्णन नहीं कर गये, इसलिए सन्तों ने उनका खंडन कर दिया। कबीर अनपढ़ थे। संस्कृत जानते नहीं थे। जब उनका शास्त्रकारों के साथ शास्त्रार्थ हुआ, वह उनको अनुभव न करा सके, इसलिए उन्होंने सबका खंडन कर दिया। ऐसी ही दशा मेरे विचार में स्वामी जी की है।

यदि वह होते तो मैं उनको पूछता कि आपने वाणी रची। जिस उद्देश्य से आपने काम किया वह तो पूरा न हुआ। आपने खंडन कर दिया और खंडन करके एक राधास्वामी पंथ और चला दिया जहाँ पहले से ही अनेकों और सम्प्रदाय थे। जहाँ मानव जाति इतनी और बँटी हुई थी वहाँ एक शाखा ओर निकल गई।

मैं आया हूँ अनामी धाम से। समयानुसार यह सिद्ध करने के लिए कि यह जितने सम्प्रदाय है इनमें कोई उस घर का पता नहीं देता। एक निज स्वरूप (जात) है एक मालिक है जिसको सन्त मत वाले अनामी कहते हैं। शास्त्र कहते हैं सब से पहिले असत ने सत को ढक रखा था। इसका क्या अभिप्राय है तो वह जानते होंगे। मैं नहीं जानता। इसीलिए मैं कहता हूँ कि जब कोई वाणी आदमी कहे तो अधूरी नहीं कहनी चाहिये। प्रत्येक भाव को पूर्ण रूप से पब्लिक में प्रस्तुत करना चाहिये।

मैं कहे जाता हूँ कि जब भी मेरी वाणी प्रकाशित की जाये पूरी करके की जाये। अधूरी से गलत-फहमी होती है। यह शब्द जो वाणी में लिखा है– 'एक पुरुष अजायब पाया' यह अधूरा है क्यों? क्योंकि उन्होंने इस शब्द में खंडन तो कर दिया मगर वर्णन नहीं किया कि क्यों ऋषि मुनि गलत है। चूँकि यह बात नहीं बताई इसीलिए मानव-जाति में एक पंथ 'राधास्वामी' चल पड़ा और हमको बाँट दिया।

इस राधास्वामी पंथ से क्या हुआ? अनेकों गद्दियाँ बन गई। अनेकों गुरु बन गये। कोई किसी गुरु की निन्दा करता है कोई किसी गुरु की। गुरु नाम है ज्ञान का, भेद का। भेद तो किसी ने समझा नहीं, गुरु को पकड़ कर बैठ गये। यह जितने राधास्वामी मत वाले हैं यह सब धोखा खा रहे हैं। जिस सिद्धान्त के अनुसार स्वामी जी ने खण्डन किया उसी

सिद्धान्त के अनुसार मैं कहता हूँ कि इन सबने धोखा खाया हुआ है। इनको न गुरु का पता है और न असलियत का ज्ञान है। कोई व्यास को, कोई आगरे को, कोई कबीर की किसी गद्दी को, कोई निरंकारों को जफ्फा मारे या जेट बाँधे बैठे हैं। कोई फकीरचन्द को जेट भरे बैठा है। यह सब भूल भ्रम है।

हमें कहें कौन समझाई।
परतीत न कोई लाई॥

लोग स्वामी जी की वाणी पर परतीत ला ही नहीं सकते थे क्योंकि उन्होंने समझाने का जो तरीका रखा वह गूढ़ था या समझ में नहीं आ सकता था। मैं जो बात कहता हूँ, कोई आ जाये, यदि वह थोड़ी बहुत बुद्धि रखता है तो वह मेरी बात को समझ जायेगा। वह अमल करके वहाँ पहुँचे या न पहुँचे यह दूसरी बात है। कह तो सबने दिया मगर अपने मान अपने डेरे धामों को बढ़ाने के लिए बात को स्पष्ट करके नहीं कहा।

सन्तन यह भाख सुनाया।
कोई गुरु मुख बूझ बुझाया॥

स्वामीजी कहते हैं कि सन्तों ने यह भेद दिया। कोई गुरुमुख ही इस रहस्य को समझ सका। गुरु मुख बनाना तो गुरु का काम है। वह गुरु मुख कैसे बनायेगा? वह अपने वचनों से उसकी बुद्धि को निश्चयात्मक बना देगा। गुरु ही गुरुमुख बनाता है मगर किनको? उनको जो इस भेद को पाने के लिए आते हैं।

मेरे पास सैकड़ों आदमी आते हैं। कोई पुत्र के लिए, कोई माया के लिए, कोई दु:खों को दूर करने के लिए।

घट घट में काल समाया।
श्रुति स्मृति जाल बिछाया॥

षट शास्तर बुद्धि चलाया।
अन्धे मिल धूल उड़ाया॥

बात जो उन्होंने कही है वह ठीक कही है। केवल दुनिया के पदार्थ प्राप्त करने के लिए, मनानन्द तथा आत्मानन्द के लिए यह सब मत चले हैं। स्वामी जी ने तो उनको उस ऊँची दृष्टि से खंडन कर दिया। मैं उन मतों का खंडन नहीं करता। इनके बिना यह जो काल की सृष्टि है, रचना है, इसमें मनुष्य सुखी नहीं रह सकता।

अब 'घट घट में काल समाया' अर्थात् जो प्रकाश है, उसकी रचना हो रही है सारे शरीर में। यह पंथ या जितने मार्ग हैं यह तो हमारी काल की सृष्टि को ठीक रखने के लिए हैं। मैं इनको गलत नहीं कहता। इस काल के चक्र में जब तक इन पंथों के कथनानुसार नहीं चलोगे, सही मार्ग पर न आ सकोगे।

ज्ञान, ध्यान, योग, जप-तप यह क्या है? तुम्हारे इस जीवन को जो यह तुम्हारा शरीर है, उसको ठीक रखने के लिए है। यदि तुम इनको छोड़ दोगे तो तुम्हारे यह जीवन बिगड़ जायेगा। जो अधिकारी है, जो असली मालिक को जानने की इच्छा रखते हैं अथवा अपने घर जाना चाहते हैं उनके लिए यह सन्तों का मार्ग है। जो काल की सृष्टि में रहना चाहते हैं उनके लिये माया का कानून-शिव संकल्पमस्तु, साधन, योग, जप, तप अनिवार्य है।

मैनें शिक्षा को बदल दिया। यही दाता दयाल ने कहा था- फकीर चोला छोड़ने से पहले शिक्षा को बदल जाना। क्या बदला? यही कि तुम अपने घर जाना चाहते हो तो वहाँ जाओ। तुमको रास्ता बता दिया शब्द और प्रकाश। इस दुनिया में रहते हुए माया देश में शिव-संकल्प रखो।

मैं किसी न किसी ढंग से अच्छा विचार रखता हूँ। तुम किसी तरीके से अच्छा विचार रखते हो। इससे झगड़ा किस बात का! जब तक माया देश में हो भिन्नता तो रहेगी। काल के देश में तुमने जाना है। कोई किसी ढंग से अपने जीवन को श्रेष्ठ बनाये, कोई पंथ द्वारा उच्च बनाये। यह तो मनुष्य की अपनी व्यक्तिगत प्रकृति है। इसमें हमने जो गाँठ डाल दी है यह हानिकारक है।

कुछ हाथ न उनके आया।
बिन सतगुरु भटका खाया॥

वह कहते हैं भटका खाया। किस लिये भटका खाया। इसीलिए कि उस घर जाने का रास्ता नहीं मिला पाखण्ड जगाते हैं। कौन है इस काल और माया से बचे हुए? दाता दयाल ने धाम बनाई। उसके लिए पैसे की आवश्यकता पड़ती थी। व्यास का डेरा बना। आगरे में दयाल बाग बना। मैंने मानवता मन्दिर बनाया। तुम काल और माया से जा कहाँ सकते हो? जब तक तुम्हारा जीवन है तुम काल और माया से बरी नहीं हो सकते, केवल यह समझ करके कि यह इस दुनिया के जितने नियम हैं उनमें इस दुनिया को सुखी रखने के लिए तुम इन नियमों को पालो मगर यदि निज घर जाना चाहते हो तो यह विश्वास करो कि हमारा यह देश नहीं है। हमारा देश ऊपर है। इसके लिए सत्संग है अनुभव है। देखो लिखा है–

बिन सत्गुरु सब भटका खाया॥

सत्गुरु नाम है सच्चे ज्ञान का। दुनिया ने सत्गुरु समझा हुआ है बाबा सावन सिंह, महर्षि जी, फकीर चन्द, स्वामी जी आदि। न स्वामी जी सत्गुरु थे न दाता दयाल महर्षि जी सत्गुरु थे। वह जो वाणी कह गये, उसको जिसने समझ लिया, उसको सत्गुरु मिल गया। इस समझ का

नाम सत्गुरु है। यह जो राधास्वामी मत चलाया था। उस को चलाने के लिए भी तो कुछ रोचकपना चाहिये था। तभी तो लोगों को खींच कर अपने पंथ में ले आये। यह ढंग है बात कहने का मैंने वह शिक्षा बदल दी।

नीचों को घाट लगाया।
ऊचों को काल बहाया॥

क्या अभिप्राय? जो अपने आप को नीचा समझते थे, ऊँचा जाना चाहते थे अर्थात् जो समझते थे कि हम कुछ नहीं है और जो जानना चाहते थे वह सत्संग में गये। उनको ऊँचा कर दिया। जिन्होंने समझा हम सब कुछ जानते हैं, हमारा मार्ग अच्छा है उनको काल ने खा लिया। नीचे अर्थात् जिसको इस वस्तु की आवश्यकता थी वह नीचे ही थे ना! मैं नीचे उसको नहीं समझता जो बुरा भला काम करता है। जो नीचे रहता है जिसको अपने घर जाने की खोज है उसको सत्संग में जाने पर सत्गुरु ने ज्ञान दे दिया कि असली मार्ग यह नहीं यह है। जो अहंकारी थे कि हमारा मत अच्छा है निराकार ही सब कुछ है उनको काल खा गया।

राधास्वामी पता बताया।
खोजी को कमर बंधाया॥

राधास्वामी ने पता दिया। उनको जो मेरे जैसे खोजी थे। जो चाहते थे अपने घर जाना। मैं कौन हूँ? कहाँ से आया हूँ? मेरा मालिक कहाँ है? उनको हौंसला देकर के चलाया और जो नहीं चाहते थे उनके लिये नहीं।

अजायब देश

(प्रवचन–मानवता मन्दिर होशियारपुर 26-4-70)

यह शब्द वह है जिसने मुझको पागल बनाया और मैंने सारा जीवन उस मालिक की खोज में व्यतीत कर दिया–

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया।
बिन संत हाथ नहीं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

(यह शब्द पूरा पहिले दिया जा चुका है।)

अब तुम स्वयं सोचो कि इस शब्द को सुनकर, इस प्रकार की वाणियाँ सुन कर लाखों आदमी गुरु मत में शामिल हुये हैं कि गुरु उनको उस देश में पहुँचा देगा। केवल इसी धुन में आकर लाखों-करोड़ों आदमियों ने नाम लिया हुआ है। मेरे हृदय में यह भाव था कि वह देश जो यह राधास्वामी दयाल कहते हैं, उसे जानूँ।

आज कहना चाहता हूँ कि मैंने क्या समझा। उस देश का पता मुझे कैसे लगा और वह देश क्या है? इस शब्द में कड़ी है– ''कोई गुरु मुख''–

संतन यह भाख सुनाया।
कोई गुरु मुख बूझ बुझाया॥

मैंने अपने जीवन में गुरुमुख होने की पहिले कोशिश की। गुरुमुख की पहिली पहिचान यह है कि गुरु से प्रेम करे। अपना सर्वस्व उसको दे। दूसरा लक्षण यह है कि जो गुरु आज्ञा दे, उसका पालन करें। मैंने सेवा भी की और प्रेम भी किया। आरतियाँ भी कीं। इस देश का पता बताने के लिए उन्होंने मुझे आज्ञा दी थी कि सत्संग कराया करो और नाम दिया करो। नाम तो 1942 ई० के बाद मैंने किसी को दिया नहीं क्योंकि मैंने यह सोचा कि लोग नामदान के अधिकारी नहीं है। मैंने सत्संग कराया। अपने प्रण के अनुसार कहता हूँ कि मुझे उस देश का पता कैसे लगा? सत्संगियों ने मुझे यह बताया कि मेरा रूप उनके अन्तर में प्रकट होकर सहायता करता है, समाधि में, स्वप्न में, जाग्रत में परन्तु मैं नहीं होता तो मुझको उस देश में जाने का अवसर मिला।

इस वैसाखी के अवसर पर मेरे गुरु भाई भी आये हुये थे चार-पाँच। एक सन्त तारा चन्द भी थे। वह परमार्थ की खोज में थे। वह कहते हैं कि वह आत्मघात करना चाहते थे। मेरे एक गुरु भाई रामसिंह ने उसको सुमिरन ध्यान बता दिया। कहा फकीर चन्द को मिलना, वही इसी समय के गुरु हैं। वह आगे बताते हैं कि जब मैं देहली दशहरे पर गया जिसको 7-8 वर्ष हुये , वह मेरे पास आये। उसने अपने अन्तर में यह प्रण किया था कि यदि पं० फकीर चन्द सतगुरु होगा तो मुझे अपनी झूठ देगा। संयोग वश वह बैठा हुआ था, मैंने चाय के प्याले में से दो घूँट पिये और उसको दे दिया। उसका विश्वास बैठ गया। मुझे कोई पता नहीं था कि उस का यह प्रण है या वह कौन है? उसने मुझको कुछ पूछा। मैंने कहा परोपकार का काम है मगर किसी से माँगना मत। जो सेवा पब्लिक की हो सकती है, किसी बूढ़े की, किसी दुखिये की, सहायता करना, नाम

जपा करो। दो वर्ष हुये वह फिर दशहरे पर आया। अड़ के बैठ गया कि मेरे आश्रम पर चलो। मैंने कहा– मैं नहीं जाता! तू कौन है? वह कहता है कि आप नहीं जाते तो यहीं मरूँगा। उस ने अपनी एक घटना सुनाई। उसने वहाँ सत्संग घर खोला हुआ है। साल में दो सत्संग होते हैं। छः छः सात-सात हजार आदमी इकट्ठे हो जाते हैं। बूढ़े जिनका कोई वारिस नहीं होता, उनको खाना देता है। उनके लिये कमरे बनाये हुये हैं। उसने बताया कि एक दिन बाबा! तू आया और मेरे साथ सारे दिन चने काटता रहा। वह रोता था। मैं सच कहता हूँ कि मैं वहाँ उसके चने काटने नहीं गया।

ऐसे ही वहाँ रिटायर्ड डायरैक्टर एग्रीकल्चर (श्री गोपीलाल) बैठा हुआ था। उसने मुझको लिखा था कि बाबा जी! एक साधु से मैंने नाम लिया था मगर प्राप्त कुछ नहीं हुआ। दस हजार रुपया भी खर्च किया। अब आप नाम दे दो। मैंने कहा मैं किसी को नाम नहीं देता। मुझे राधास्वामी नाम मेरे सतगुरु ने दिया था और गुरु स्वरूप का ध्यान बताया था। तुम कहीं से नाम ले लो। मेरा साहित्य पढ़ते रहना ताकि गुमराह न हो जाओ। उसने मेरे खत को नाम समझ लिया। वह ध्यान में बैठने लगा। तीन वर्ष में कुल श्रेणियाँ पार कर गया। जब बीन का शब्द सुनाई देने लगा तो होशियारपुर में 9 सेब लेकर आया। उसने अपनी डायरी रखी हुई थी। वह पढ़कर मुझे सुनाई। उसमें लिखा हुआ था कि अभ्यास के समय मेरा रूप प्रगट हुआ। उसे यह कहा वह कहा। ऐ धार्मिक जगत के लोगो! मुझे तो पता ही नहीं था कि कब वह मेरा ध्यान करता है। ऐसे सत्संगियों की बदौलत मुझे उस देश का पता लगा।

उस समय मैंने पाँच पैसे और नारियल कृषक को दिया और कहा कि नाम दान दिया करो, सत्संग कराया करो और ताराचन्द को उस क्षेत्र (हरियाना) का गुरु बना दिया। क्यों मैंने उस को गुरु पदवी दी? उसके घर का खाया कुछ नहीं। कृषक 9 सेब लाया था और ताराचन्द इस बार 51/-रु. और एक शाल लाया था। मैंने वह लेकर गुरु भाई हरनाम सिंह को दे दी। जब वह चलने लगा तो 101/- रु. संत ताराचन्द को अपने पास से दिया।

यह इसलिए मैंने आपको कहा कि जिस मनुष्य के मन में इतनी शक्ति है कि वह अपने मन से बाबा फकीर को बना कर उस से चने कटवा सकता है तो उसकी इच्छा शक्ति कितनी प्रबल होगी। मैंने सोचा कि इसकी इच्छा शक्ति (Will Power) प्रबल है यदि यह किसी को आशीर्वाद देगा तो किसी का भला होगा। उसकी विचार शक्ति उसका भला कर सकती है। इस विचार से मैंने उसको गुरु पदवी दी। कृषक को इसीलिए दी कि इसके मन के अन्तर इतनी शक्ति थी वह मेरे रूप को बना कर चढ़ाई कर गया। मैंने तो चढ़ाई कराई नहीं। वह नाम देते हैं सत्संग कराते हैं। उनको यह आज्ञा नहीं है कि वह मानवता मंदिर के लिए अपील करें या पैसा इकट्ठा करें।

इस प्रकार के हजारों अनुभवों ने मुझे उस देश का पता बताया। वह कौन था जो उनके अन्तर गया। वह उनका अपना ही मन था जिसको संत काल कहते हैं। यह मन ही तुम्हारा रक्षक है और यही तुम्हारा भक्षक है। यही बात इसमें लिखी हुई है–

घर घर में काल समस्या।
श्रुति स्मृति जाल बिछाया॥

षट शास्तर बुद्धि चलाया।
अंधे मिल धूल उड़ाया॥
पाराशर जोगी नारद।
श्रृंगी ऋषि गोता खाया॥

एक ब्राह्मण इस मत को खंडन करने वाला समझ कर इस मत को छोड़ जाता मगर मैं छोड़ नहीं सकता था क्योंकि मेरा एक हृदय था जो मुझको दाता दयाल के चरणों में ले गया था। उनको मैं छोड़ नहीं सकता था। मुझे उस देश का पता नहीं लगता था। मैं जीवन भर साधन अभ्यास, सच्चाई, नेकी, परोपकार के नियमों पर तलवार की धार पर चलता हुआ आ रहा हूँ। इन सब अनुभवों ने मुझे विश्वास करा दिया कि स्वामी जी ने जो कुछ लिखा है वह वास्तव में ठीक लिखा है। कैसे ठीक लिखा है? हम जिसको समझते हैं कि जो कोई हमारे अन्तर प्रगट होता है वह सतगुरु है या मालिक है मगर वह मालिक नहीं है। वह उनका अपना ही मन है या आत्मा है।

एक कादरी बाबा (अलीगढ़) को मैंने वैसाखी पर बुलाया था। वह आये। दो वर्ष हुये मैंने मानवता मन्दिर में उनको सत्संग कराया था।

मुर्शिद नैनों बीच नवी है।

वह सुन कर चले गये। वहाँ से चिट्ठियाँ लिखते थे। बाबा जब मैं अन्तर में नूर में जाता हूँ। नूर (प्रकाश) में खुदा की दरगाह में होता हूँ, वहाँ मैं (फकीरचन्द) होता हूँ और मेरे गुरु महाराज (महर्षि) जी का रूप होता है। उनको 80/- रु. और एक चादर अपने पास से दी, 50/- रू. और आने-जाने का किराया मानवता मन्दिर वालों ने उनको दिया।

क्यों दिया? क्योंकि मुझको पता बताने वाले कृषक या सत्संगी लोग या कादरी बाबा जैसे थे।

एक हरबंस सिंह इन्जीनियर अफ्रीका का है। उसके अन्तर 12 वर्ष हुये प्रकाश में मेरा रूप प्रकट हो गया। वह बेहोश हो गया था। डॉक्टर को भी बुलाने की आवश्यकता हुई। वह मुझको इस लिये मानता है कि मेरा रूप उसके अन्तर प्रगट हुआ या कुछ लिख देता हूँ वह पूरा हो जाता है। उसने मुझे एक घड़ी भेजी जिसका मूल्य वहाँ 450/- रु. है और यहाँ एक हजार रुपया है। जब मैं उसके अन्तर प्रगट नहीं हुआ तो मेरा क्या अधिकार था उस घड़ी को लेने का। मेरा लड़का था, दामाद था उनको दे सकता था या स्वयं भी पहन सकता था मगर मैंने नहीं ली। मैंने उसको हरि विलास शर्मा सैक्रेटरी को दे दी।

हम लोग संत कहला कर गद्दी पति बनकर इन वाणियों के आधार पर गृहस्थियों, निबल-अबल जीवों को अपना बारबरदारी का जानवर बनाते हैं वे अज्ञान में रख कर सच्ची बात न बताकर हमारी शरीरिक कमजोरी का अनुचित लाभ उठा कर हमारे धन को लूटते हैं। आज यह दशा है कि मैं उठा, गुरुयायी का स्वाँग बनाया और तुमको अपना चेला बना लिया। देखो! संत मत की लाखों गद्दियाँ हैं, मगर शायद ही कहीं सच्चाई प्रकट की जाती हो। इसलिए मैं इस संसार में अनामी धाम से फकीर के चोले में केवल रहस्य बताने के लिए आया हूँ कि रहस्य क्या है। तुमको जो कुछ मिलता है वह तुम्हारे कर्म का खेल है, जो पहिले किया हुआ है या जो अब करते हो। तुमने किसी को दिया हुआ है तो वह मिलेगा। यदि तुमने किसी को पिछले जन्म में या इस जन्म में नहीं दिया

हुआ है तो कुछ नहीं मिलेगा। धन चाहते हो धन दो। आदर-मान चाहते हो तो आदर-मान दो। अपमान चाहते हो तो किसी का अपमान करो। तुम्हारा अपमान हो जायेगा। जो कुछ तुम चाहते हो वह तुमको मिलेगा। तुम पर जो कुछ बीतती है यह तुम्हारे कर्म का फल है। इसलिए मैं डर गया। यदि आज मैं पर्दा रखता तो मैं लाखों रुपये का मालिक होता। तुम इस अज्ञान में आकर मुझको देते कि मेरा रूप तुम्हारे अन्तर में प्रकट हो गया, किसी के बच्चा हो गया प्रशाद से, किसी का रोग चला गया। इस प्रकार की बातें तुम सुनते और फिर आकर लुटते। मैं डर गया कि चार दिन के जीवन के लिए झूठे मान-प्रतिष्ठा प्राप्त करने को क्यों पाखंड जगाऊँ।

लोग कहते हैं कि मरते समय बाबा पालकी लेकर आया, कोई कहता है हवाई जहाज लेकर आया। अब मैं तो जाता नहीं तो जिस पर बैठा हुआ है, वह फुरता है। यह है माया और काल। तुमको-उसका पता नहीं। तुम इस काल के मत में आकर फँस गये। वाणी है-

काल ने जग भरमाया, मैं का से कहूँ बखान॥

इस तुम्हारे मन ने तुमको भरमाया हुआ है। जो कुछ तुम्हारे अन्तर रूप बनते हैं, फुरनायें आती है, यह हैं नहीं मगर तुम उनको संत मानते हो। इसका प्रमाण? जिसके अन्तर में मेरा रूप प्रगट होता है, मैं तो होता नहीं, वह उसको संत मानता है। वह भ्रम में है। किसी की बातें सुनना गुनना यह सब भ्रम है। राधास्वामी दयाल की वाणी मेरी समझ में नहीं आती थी। मैंने यह समझ प्राप्त करने के लिए दस-दस-बारह बारह घंटे साधना करके देखा है। तलवार की धार पर चला हूँ। तो मुझको इस भ्रम

से निकालने वाले आप लोग हैं। यह ज्ञान मुझको सत्संगियों के कारण मिला कि मैं इस अवस्था में पहुँचने के योग्य हुआ। फिर वह अवस्था या मंजिल क्या है? सहस्रदल कंवल त्रिकुटी, सुन्न, महासुन्न और भँवर गुफा यह सब अवस्थायों या श्रेणियाँ काल में हैं। यह सारा खेल काल का है, क्योंकि जब तक रूप रंग और दृश्य तुम्हारे अन्तर आते रहेंगे तुम उस घर जो अजायब पुरुष का है, न जा सकोगे।

इक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया।
बिन सन्त हाथ नहिं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

मैंने इस वाणी के सत्य होने का आपको-अपने जीवन के अनुभव के आधार पर प्रमाण दे दिया कि जितने रूप रंग तुम्हारे अन्तर में प्रगट होते हैं यह वास्तव में होते नहीं मगर भासते हैं।

स्वामी जी की वाणी के अनुसार यह जो नाम है-

तुमको जगत सत्य कर समझा, कैसे पाओ नाम निशान॥

एक तो इस जगत को तुम समझते हो कि हमेशा रहेगा। यह तो बदलता रहता है। तुम्हारे अन्तर की दुनिया है तुम उसको संत मानते हो। बाबा फकीर प्रगट हो गया या कृष्ण प्रगट हो गये। तुम्हारे अन्तर कोई बातें हुई। कोई सच्ची हो गई कोई न हुई। दुनिया बनती रहती है वह है नहीं, भासती है, वह इस नाम को प्रगट नहीं कर सकेगा।

नाम रहे चौथे पद माहीं
यह ढूंढे त्रिलोकी माहीं॥

इस सन्तों के मार्ग में जो धोखा हो रहा है इससे मैं नहीं गृहस्थियों को बचाना चाहता हूँ मगर तुम तो इससे बचना नहीं चाहते। तुम्हारे ऊपर इस मन ने तथा काल माया ने अपना चक्र डाला हुआ है कि तुम सच्ची बात सुनने को तैयार नहीं हो।

जिस किसी ने भी काम किया वह तुम्हारे लिये नहीं किया किन्तु अपने धन और मान के लिये किया। तुम कहोगे मैं इनका खण्डन करता हूँ। मैं खण्डन नहीं करता। जिस सिद्धान्त के अनुसार स्वामी जी को व्यास, पाराशर, श्रृंगी आदि के खण्डन करने का अधिकार था, उसी सिद्धान्त के आधार पर मैं खण्डन कर रहा हूँ।

आगरे में दयाल बना। व्यास में डेरा बना। नीयत क्या थी वहाँ शहर बसाने की? इसका प्रमाण हुजूर बाबा जैमल सिंह जी के पत्र हैं जो बाबा सावन सिंह जी के नाम छपे हुए हैं। दाता दयाल महर्षि शिव ने धाम बनाई, स्कूल बनाया। आगरा में स्वामी जी की समाधि बन रही है। इसी प्रकार मुसलमानों, हिन्दुओं या दूसरे सम्प्रदायवादियों ने जो काम किये वह परमार्थिक नहीं और न आध्यात्मिक हैं। न इन बातों से किसी को अजायब पुरुष मिल सकता है। यह सामाजिक कार्य हैं और इस दुनिया के भले के लिए आवश्यक हैं। मैं यह नहीं कह सकता कि यह काम बुरे हैं। मैंने भी मानवता मन्दिर बनवाया है मगर इन स्थानों पर यह प्रोपेगंडा है कि जो यहाँ सेवा करेगा, कमरे बनवायेगा, उसको मुक्ति मिल जायेगी। कोई यह न समझे कि मैं इनका खंडन कर रहा हूँ मगर इनका कोई सम्बन्ध परमार्थ के साथ नहीं है।

मैं फकीर हूँ और निर्भय होकर स्वामी जी की बाणी के अनुसार कहे जा रहा हूँ।

क्या व्यास वशिष्ट भुलाया।
क्या शेष महेश भरमाया॥
पाराशर जोगी नारद।
श्रृंगी ऋषि गोता खाया॥

जिस सच्चाई के आधार पर स्वामी जी ने इसका खंडन किया है उसी सच्चाई के आधार पर मैं इस वर्तमान गुरुइज्म का खंडन किये जाता हूँ। जिनको मेरा कथन बुरा लगता हो वह न आया करे।

कृष्ण भगवान कहते हैं कि जब-जब धर्म की हानि होती है मैं अवतार लेता हूँ और जो तत्व खराब होता है उसका नाश करता हूँ। सन्तों का भी अवतार होता है। जब जब धर्म की हानि होती है, अज्ञान बढ़ जाता है तब कोई सन्त आता है। मैं वह सन्त हूँ जो इस अज्ञान-रूपी अन्धकार को दूर करने को आया हूँ। सच्चाई तो सब सन्तों ने वर्णन कर दी मगर केवल संकेत रूप में। स्पष्ट नहीं कहा। पिछली बार जब मैं यहाँ आया था तो मुझे अमरजीत का ससुर मिला था। उससे हुजूर बाबा सावन सिंह जी ने कहा था कि जब 40 दिन के बच्चे बन जाओगे तब अपने घर जा सकोगे। अब तुम बताओ कि क्या 40 दिन का बच्चा झूठ बोल सकता है। कैसे आशा करते हो कि सन्त झूठ बोलेगा।

मैं संसार से अवतार लेकर आया हूँ। जो सच्ची शिक्षा है उसको पुनरुत्थान करने के लिए कि यह है सच्चा गुरुमत। अब मैं अपनी आत्मा से पूछता हूँ कि क्या तुझे उस अजायब पुरुष का पता लगा। जो अजायब

पुरुष मैंने समझा है सम्भव है वही स्वामी जी का हो या और कोई अजायब पुरुष हो मगर जो कुछ मेरी समझ में आया है वह कहता हूँ–

जब अभ्यास करता हूँ तो रूप रंग तो स्वाभाविक ही छूट जाते हैं। मैंने इस बार सतसंगियों की पूजा की थी। वह मेरे सतगुरु हैं। दाता ने कहा था कि सत्पुरुष राधास्वामी दयाल के दर्शन सत्संगियों के रूप में होंगे। वह हो गये। वह कैसे? मुझे यह ज्ञान मिल गया कि मैं तो इनके अन्तर जाता नहीं अत: मेरे अन्तर भी जो दृष्टिगोचर होता था यह तो था नहीं। तो मैं प्रकाश और शब्द में चला जाता हूँ। प्रकाश और शब्द भी एक अथाह सागर है जिसको सत्पुरुष कहते हैं। स्वामी जी कहते हैं–

इक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया॥

क्या किसी ने इस तरह दुनिया को भेद दिया जिस तरह प्रमाण दे देकर मैंने यह भेद खोला है? किसी ने नहीं खोला। यदि कोई खोले भी तो उसका मान जाता है। दूसरी जगह रुपयों की बोरियाँ भरी जाती हैं। मैं भी पर्दा रखता तो जितनी इच्छा होती रुपया ले जाता, अपना प्रोपेगंडा कराता कि बाबा बड़ी करनी वाला है मगर मैं रुपया लेने नहीं आया। मैं जो अज्ञान का पैसा ले लूँगा तो वह जहाँ लगेगा वहाँ नाश करेगा। यह पैसा लेना धोखा है। अनर्थ है।

फिर अब मैं उस प्रकाश और शब्द के मंडल में रहता हूँ मगर वह जो पुरुष अजायब है वह उसके आगे है। वह शब्द और प्रकाश के मंडल से आगे है। प्रकाश और शब्द उसकी देह है। तुम पूछोगे कैसे आगे है? तुम स्वयं अभ्यास करके देखो। जब रूप बनाते हो तो तुम और हो और रूप

और है। प्रकाश देखते हो तो प्रकाश और है और तुम और हो। जो वस्तु प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती है, शब्द में रहती हुई शब्द को सुनती है, वह है 'अजायब पुरुष'। मैं अन्तर में जाता हूँ देखता हूँ। हमारी सुरत उस अजायब पुरुष की अंश है। तुम सब उस अजायब पुरुष की अंश या किरण हो।

नीचे आकर काल और माया आ गई और अपने घर की सुध बिसर गई। तभी काल और माया में फँस गये। कभी दुनिया में फँसे! कभी काल और माया में फँसे।

हो सकता है जो पुरुष मैंने समझा है वह वह न हो। यह दावा करना पागलपन है। मैं किसी बात का दावा नहीं करता मगर इतना तो कह सकता हूँ कि यदि स्वामी दयानन्द को सिद्धार्थ प्रकाश लिखने का हक था, स्वामीजी महाराज को यह वाणी लिखने का हक था, गुरु नानक को 'जप जी' लिखने का हक था तो 83 वर्ष में जो मैंने अनुभव किया है उसके कहने का मुझे भी हक है। मैंने 1942 के बाद किसी को नाम दान नहीं दिया। कुरुक्षेत्र का एक पंडित था। उसको सत्संग कराये है 'नाम दान' पुस्तक छपी है। आज कल तो नाम रुपये के लिए दिया जाता है ताकि यदि पाँच हजार लोगों को भी नाम दे दिया और एक एक रुपया प्रति मास भी हर एक देगा तो 5000/– माहवार हो जायेंगे। नाम तो उसको देना चाहिये–

विषयों से जो रहे उदासा
परमारथ की जा मन आसा॥

धन सन्तान प्रीति नहिं जाके।
खोजत फिरे साध गुरु ताके॥

दुनिया ने नाम लिया हुआ है मगर क्या तुम विषय विकारों से वरी हो? चलो! बीज डाल दिया गया है। हर एक काम में उज्वल और काला पहलू होता है।

तो वह अजायब पुरुष क्या है? मुझे अभी पूरी तरह से उसमें वासा नहीं मिला। मैं गिरता रहता हूँ। शब्द और प्रकाश में आना या देह में आना गिरना है। कबीर की बाणी है–

ऐसा लो तत ऐसा लो, मैं केहि विधि कथौ गंभीरा लो।
बाहर कहौ तो सत गुरु लाजे, भीतर कहौं तो झूठा लो॥
बाहर भीतर सकल निरतर, गुरु प्रतापे दीठा हो॥

कबीर कहते हैं कि वह तत्व ऐसा है कि मैं किस तरह कहूँ कि वह क्या है। बाहर कहूँ तो सतगुरु लाजे और भीतर कहता हूँ तो झूठ कहता हूँ। क्यों? क्योंकि वह जो तुम्हारी सुरत रूप है अर्थात् उस मालिक की किरण, उसके बीच में तो सारा संसार रहता हे। वह तुम्हारे अन्तर कैसे हुआ? यदि यह कहूँ कि वह बाहर है तो मैं बाहर में आकर बात कर रहा हूँ तो किस को कह रहा हूँ कि यह बाहर है। वह कहते है कि गुरु के प्रताप से दिखाई दिया। ऐ सत्संगियों! तुम मेरे गुरु हो क्योंकि तुम्हारी वजह से मुझे यह ज्ञान हुआ।

दृष्टि न मुष्टि अगम अगोचर, पुस्तक लिखा न जाई लो।
जिन पहिचाना तिन भलजाना, कहे न को पतियायी हो॥

कहते हैं कि जिसने समझा उसने जाना। कहने से किसी को विश्वास नहीं आता मगर मैंने कोशिश की है कि जो समझने वाले हैं,

पहुँचेगे जब पहुँचेंगे, मगर उनको अक्ली तीर से तो पता लग जाये। तुम लुटोगे तो नहीं। मैंने बैसाखी पर कहा था कि मालिक यहाँ नहीं रहता। जैसे पानी का समुद्र है, प्रकाश का भण्डार बाहर है तो इसी तरह जो सुरत है उसका भण्डार भी ऊपर है जिसको मालिके कुल या निजस्वरूप कहते हैं, जैसे सूर्य यहाँ नहीं रहता, उसकी किरण यहाँ है। मैं संत सतगुरु वक्त की हैसियत में यह संदेश अकाल पुरुष से लाया हूँ कि ऐ मानव जाति! वह मालिक यहाँ नहीं रहता। वह एक तत्व है। दुनिया में सुरत उसकी अंश है। वह हर एक व्यक्ति के अन्दर है। इसलिए उसकी पूजा यही है कि मनुष्य मनुष्य की सेवा करे। यह है इस समय का धर्म। तुम कुल संसार की तो सेवा नहीं कर सकते। जिनको भगवान ने तुम्हारे साथ लगाया है– तुम्हारे बूढ़े माँ–बाप, बच्चे आदि उसकी सेवा करना ही उस मालिक की सेवा करना है। यदि उससे मिलना चाहते हो तो अपने अन्तर चलो।

पिंड अन्ड ब्रह्मण्ड से पारा।
वह है देश हमारा॥

जो अपने अन्तर में देह, मन, आत्मा और प्रकाश से निकले तब अपने घर जाये। वह जो अजायब पुरुष है वह यहाँ नहीं रहता। जिस प्रकार हर एक वस्तु का लोक है या केन्द्र है इसी प्रकार सुरत का केन्द्र अकाल पुरुष है। हम सब अकाली है। हम अपने घर को भूल गये और इस काल माया में फँस गये।

मीन चले जल मारग जोवे, परमतत्व धौं कैसा लो।
पहुप वास हूँ ते कछु झीना, परमतत्व धौं ऐसा लो॥

उसको कौन पायेगा? जब मूसलाधार पानी गिरता है मछली धार को पकड़ कर ऊपर जाती है तो जो सुरत सुमिरन ध्यान भजन व नाम की डोरी को पकड़ कर चढ़ती है उसको पता होता है कि वह क्या है। वह फूल की सुगंध से भी पतला है। अब उसको अनुभव कौन करेगा? जो अपने अन्तर उसका साधन करता है। मुझे नाम की प्राप्ति के लिये सत्संग कराने और नाम दान देने का आदेश दिया गया था। गुरु मुख होने के लिये मैंने आज्ञा का पालन किया।

आकाशे उड़िगयो विहंगम, पाछे खोज न दरसीलो।
कहें कबीर सतगुरु दाया ते, बिरला सतपद परसीलो॥

वह कहते हैं पंछी आकाश में उड़ गया। पीछे जो कुछ था उस को भूल गया। तो कबीर कहते हैं कि सतगुरु की दया से ही कोई उसे पाता है। मैंने तुम लोगों की दया से इस रहस्य को पाया है। आज का शब्द था–

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया॥
बिन संत हाथ नहिं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

संत की यह महिमा है कि वह जीव को इस काल और माया से निकाल कर अपने घर का पता देता है यहाँ तक तो मैं संत की महिमा को मानता हूँ और उसकी सेवा को भी मानता हूँ। तुम लोग सेवा को फल फूल और रुपया चढ़ाना समझते हो। संत मत की असली सेवा है–

दर्शन करे वचन पुनि सुने। सुन सुन कर नित मन में गुने॥
गुन गुन काढ़ि लेय तिस सारा। काढ़ि सार नित करे अहारा॥
कर अहार पुष्ट हुआ भाई। जग भौ भय लाज सब गई नसाई॥

यह है सतगुरु की मन की सेवा। यदि सत्संग में दर्शन करते रहो, पूरे ध्यान से उसकी वाणी को सुनते रहो तो तुम्हारी सुरत स्वयं ही ऊपर को चलेगी। तुमको बहुत कुछ लाभ मिल सकता है। स्वामी जी ने लिखा है कि दुनिया जो आती है–

सब ही आये सतगुरु आगे।
दर्श न पकड़ा वचन न लागे॥

कहो अस सत्संग से क्या फल पाया।
वक्त गया और जनम गंवाया॥

सब सत्संग करते हैं मगर सत्संग करने का ढंग नहीं जानते। यदि किसी को सत्संग करने का तरीका आता हो तो सत्संग का बड़ा फल है। कोई जीव आप गुरु मुख नहीं बन सकता। गुरु ही किसी को गुरुमुख बनाता है। गुरु की दया यही है कि अपने वचनों से जीव की बुद्धि को निश्चयात्मक बना देता है।

जब दया गुरु की हुई, निश्चय की शक्ति मिल गई।
दुरमति जाती रही, सुमति की शक्ति आ गई॥

गुरु क्या करता है? यदि किसी को गुरु मिल जाये, मगर गुरु के वचनों में यह प्रभाव हो ये तो वह किसी बात का निश्चय करा देता है। अमल करना तुम्हारी ड्यूटी है। मैंने निश्चय ही कराया कि असलियत यह नहीं यह है। यदि तुम मेरी बात को खोपड़ी में रखो तब? तुम समझते हो कि गुरु ने फूँक मार कर तुम्हारी सुरत चढ़ा देनी है। गुरु का काम तुम्हारी बुद्धि को निर्मल करके तुम्हारे घर का पता बताना है।

जब दया गुरु की हुई, निश्चय की शक्ति मिल गई।
दुरमित जाती रही, सुमति की शक्ति मिल गई॥

दुरमति कहते हैं गलत विचार को। गुरु उन लोगों की बुद्धि को निर्मल करके निश्चयात्मक बनाता है जो परमार्थ की दृष्टि से सत्संग में जाते हैं। तुम लोग तो कोई भाई के लिए, कोई धन और पुत्र के लिए, कोई बीमारी से नीरोग होने के लिए, सत्संग में आते हो। सत्संग में उद्देश्य को लेकर जाना चाहिए। जिनके मन में तड़प होती है वह इस तरह जाते हैं।

मैंने बहुत कुछ कह दिया। मैं जानता हूँ जहाँ मैं बोलता हूँ आप उसके अधिकारी नहीं है। यह तो है परमार्थ और आप हो दुनियादार। अब स्वार्थ बताता हूँ। जैसा कि मैंने बताया कि मैं किसी के अन्तर नहीं जाता। यह उन लोगों का विश्वास होता है। प्रवृत्ति मार्ग में जहाँ कहीं किसी पर विश्वास हो- राम, कृष्ण, देवी पर वहाँ रखो मगर एक पर रखो। चाहे जिस रूप में मान लो- निराकार में मान लो चाहे साकार में। तुम्हारा जो विश्वास है वह तुम्हारी सहायता करेगा। यह दुनियादारी के लिए हैं। तुम एक जगह विश्वास रखो। जो बदलते रहते हैं वह गलती करते हैं। धोबी का कुत्ता घर का न घाट का। किसी की कोई चीज़ पूरी नहीं होती, वह तो ब्रह्माण्डीय मन है। उसका कोई रूप नहीं। उसे एक रूपम ेंम ानल ो ाद ूसरेज ोप ्रवृत्तिम ार्गके ि नयमह ैउ नकोप ालो। निबलता-अबलता मत पालो।

निबलता- शरीर का पुष्ट न होना या पाचन शक्ति खराब होना है या विषय विकार कामना है। इसलिए अपने काम अंग को वश में करो।

दुनिया कहती है कि सर्वश्रेष्ठ है मगर वह नहीं है। यह जो कहा गया है कि सर्वश्रेष्ठ है वह परमार्थ की दृष्टि से कहा गया है अन्यथा मनुष्य बड़ा अत्याचारी है। तुम अपने स्वाद के लिए अपनी खुशी के लिए बच्चे पैदा करते हो। क्या कभी सोचा है कि इनके साथ क्या बीतेगी। मरते खपते हैं मगर होश नहीं आता। इसलिए कुदरत का नियम है कि सन्तान को सन्तान की दृष्टि से पैदा करो। जैसे तुम हो, जो विचार लेकर तुमने पैदा किये हैं अथवा बच्चे के पेट में होते हुए माँ के जैसे विचार हैं वैसे बच्चे के होंगे।

लोग बच्चों को नाम दिला देते हैं, क्या लाभ! बिशन दास का लड़का दुबला-पतला था। मैंने कहा सुमिरन ध्यान छोड़ दे। जो कहता हूँ वह कर। तेरा जीवन सुखदायी हो जायेगा। गुरु जो मुँह से वचन कहता है वह है नाम। वह हर एक के लिए एक नहीं।

गुरु वाक्यम् मूल मंत्रम्।

हर एक आदमी इस नाम का अधिकारी नहीं है। इसलिए अपने बच्चों के चाल-चलन का ख्याल रखो। यदि दुनिया में सुखी रहना चाहते हो तो निबलता को ठीक करने की कोशिश करो। विष्णु भगवान् नाभि में रहते हैं। अपनी पाचन शक्ति को ठीक रखो। विषय विकार कम करो। स्वास्थ्य को ठीक रखो।

यह ख्याल का जगत है आशा का जगत है अत: अच्छी आशा रखो। बुरी बात कभी न सोचो। हमेशा विश्वास रखो कि जो होगा अच्छा होगा।

जो करि है सो भला।

यदि तुम कमजोर ख्याल हो गये तो तुम्हारा ख्याल ही तुम को ले डूबेगा। यह इस काल की रचना का नियम है। आशावादी रहो। दिल को कभी मुरझाओ नहीं। हमेशा आशावादी रहो। मीराबाई का विश्वास था कि ठाकुरों का प्रसाद अमृत होता है इसलिए विष ने उस पर प्रभाव नहीं किया। जो मुझ पर विश्वास रखते हैं उनका काम हो जाता है मगर मेरा नहीं होता।

उस मालिक को हमेशा अपने साथ समझो। कभी न सोचो कि वह व्यास, आगरा या होशियारपुर में रहता है। वह 24 घंटे तुम्हारे साथ रहता है।

दूसरे किफायतशारी Economy करो। सौ की आमदनी है तो 99/- खर्च करो। एक अवश्य बचाओ स्वास्थ्य को ठीक रखो। पैसे को व्यर्थ खर्च न करो। समय सदा किसी न किसी काम में खर्च करो। स्वास्थ्य को विषय विकार में नष्ट न करो। यह है स्वास्थ्य का कानून। तुम इससे सुखी रहोगे। मैं सुखी रहता हूँ। मैं 83 वर्ष का हूँ। अपने-आपको जवान समझता हूँ। मुझे जब से होश है स्वास्थ्य को ठीक रखता हूँ। पैसे की किफायत करता हूँ और समय को नष्ट नहीं जाने देता। हमेशा कुछ न कुछ काम करते रहा करो वरन् खाली दिमाग शैतान का घर होता है। यह है जीवन के नियम।

सबसे पहले अपने परिवार वालों को पालने की कोशिश करो। आज कल यह दशा है कि चाहे भाई भूखा मरे उसको नहीं देंगे।

जब मैं अकेला होता हूँ तो सोचता हूँ कि दाता दयाल ने यह काम तो दिया मगर तू क्या कर सकता है। सिवाय शुभ भावना के अरे मेरे पास कुछ नहीं। मैंने बड़े खोटे कर्म किये हैं जो गुरु बनना पड़ा, क्योंकि फकीरों के पास अशान्त और दुखी लोग ही आते हैं। जब दूसरे लोग मुझे अपना दुख बताते हैं और मैं दुखी लोगों के दुख को सुनता हूँ तो दुखी होता हूँ। उनके दुख को महसूस करता हूँ। मन का दुखी होना पाप का फल है। सुखी होना पुन्य का फल है। इसलिए मैं कहता हूँ कि मैंने बड़े खोटे कर्म किये हुए है।

हमेशा खुश रहने की कोशिश किया करो। तुम परमार्थ को छोड़ दो। हमेशा खुश रहा करो। यह भावना रखा कि मालिक जो करेगा अच्छा करेगा। आशावादी होकर जीवन गुजारो। हाय घाटा न पड़ जाये! हाय यह न हो जाये! वह न हो जाये! ऐसे विचार मत रखो। बस सब को शान्ति।

जेठमास का सन्देश

(मानवता मन्दिर, होशियारपुर 11-5-70)

अवधू जानि राखु मन ठौरा, काहे को बाहर दौरा॥
तो में गिरवर तो में तरवर, तो में रवि और चन्दा॥
तारा मंडल तोहि घट भीतर, तो में सात समुन्दा॥
ममता मेटि पहिर मन मुद्रा, ब्रह्म विभूति चढाओ।
उलटा पवन जटा कर जोगी, अनहद नाद बजाओ॥
सील कै पत्र क्षमा कर झोली, आसन दृढ़ करि कीजै।
अनहद सब्द होत धुन अन्तर, तहाँ अधर चित दीजै॥
सुकदेव ध्यान घर्यौ घट भीतर, तहाँ हती कहाँ माला।
कहै कबीर भेष सोई भूला, मूल छाँड़ि गहि डाला॥

तुम लोगों ने रामायण, भागवत, मुसलमानों की पुस्तकें, जैन ग्रंथ, बौद्ध ग्रंथ पढ़े होंगे। हर एक सम्प्रदाय या धर्म वाला अपना एक ढंग या तरीका बताता है। किस के लिए? मालिक की प्राप्ति के लिए कहो या आवागवन से बचने के लिए कहो। मैं था साधारण हिन्दू। ब्राह्मण कुल में जन्म था। ईश्वर, परमेश्वर को मानने वाला था। रामायण पढ़ी, इसमें लिखा हुआ था कि भगवान अवतार लेता है।

नाना भाँति राम अवतारा।
रामायण सत कोटि अपारा॥

ख्याल आया कि रामायण में तो लिखा हुआ है कि राम के नाना भाँति के अवतार होते हैं। इस खब्त में आ गया कि अवतार तो हमेशा ही होता है मुझे भी अवतार का दर्शन हो जाये। वर्षों रोया। एक दिन 24 घण्टे रोया तो एक दृश्य के द्वारा दातादयाल के चरणों में गया जैसा कि मैं कहा करता हूँ।

जिस पवित्र विभूति को मैं राम मानता था, वह मेरा विश्वास था। उन्होंने मुझको सन्तमत की ओर आकर्षित किया कि मालिक तेरे अन्तर है। सन्त मत की वाणियों में सबका खण्डन था। दिल में उस सच्चाई की खोज थी। यह जो कबीर का शब्द पढ़ा गया इसमें कबीर उस मालिक के सम्बन्ध में कहते हैं कि अनहद शब्द को सुनो। अब मैं राधास्वामी मत की वाणी सुनाऊँगा।

अजल से जानिबे हस्ती, तलाशे यार में आये।

मन में एक कुरेद थी कि उस मालिक को मिलूँ जहाँ से मैं आया हूँ। उसके बारे में मैंने रामायण की बात भी कह दी। सम्प्रदायों की क्या तफसील दूँ, यह तुम सब जानते हो। अब स्वामी जी की वाणी सुनो–

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई भेद न उसका गाया॥
(पूरा शब्द पहिले दिया जा चुका है)

रामायण, भागवत, सम्प्रदाय वालों, कबीर, राधास्वामी मत वालों ने जो कुछ कहा इन सब प्रकार की बातों के संस्कार मेरे दिमाग पर पड़े। मैं सच्चाई पसन्द मनुष्य था। मैंने अपना जीवन सच्चाई की खोज में खोया है। उस समय मैंने प्रण किया था कि इस रास्ते पर चलूँगा और जो मेरी समझ में आयेगा संसार को बता जाऊँगा। यह दावा नहीं करता कि जो मैंने समझा वह ही ठीक है। राधास्वामी दयाल ने तो दावा कर दिया।

रामायण, भागवत ने दावा कर दिया मगर मैं दावा नहीं करता। मेरे अपने जीवन का अनुभव है। अब कबीर का एक दूसरा शब्द है–

अन गढ़िया देवा, कौन करे तेरी सेवा॥

गढ़े देव को सब कोई पूजै, नित ही लावै मेवा।
पूरन ब्रह्म अखंडित स्वामी, ता को न जाने भेवा।

दस औतार निरंजन कहिये, सो अपनो ना होई।
यह तो अपनी करनी भोगें, करता औरहि कोई॥

ब्रह्मा विस्नु महेसुर कहिये, इन सिर लागी काई।
इनहिं भरोसे मत कोई रहियो, इनहूँ मुक्ति न पाई॥

जोगी जपी तपी सन्यासी, आप आप में लड़िया।
कहै कबीर सुनो भाई साधो, सबद लखै सो तरिया॥

ऐ भारतवासियो! तुम स्वयं सोचो कि इन सब प्रकार के विचारों को सुनकर मैं एक सच्चाई का खोजी क्या करता। मैं दाता दयाल के चरणों में गया। इनको मालिक का अवतार समझ कर उनकी पूजा की, आरतियाँ की। इसका प्रमाण यह है अन्दर उनकी फोटो लगी है। सुन्दर सिंहासन, चाँदी का हुक्का, जरतार से कढ़े कपड़े। यह सनातन धर्म के संस्कार थे। सन्त मत में आया। जितनी मुझमें शक्ति थी उतनी सेवा मैंने तन से, मन से, धन से की। आज जेठ महीने में यह सन्देश देना चाहता हूँ कि जो कुछ सन्तों ने कहा वह ठीक है। हाँ उन्होंने कहा इस तरह से जिस तरह रामायण को पढ़ कर दुनिया राम की उपासक हो गई और मन्दिरों और तीर्थों में जाकर अपना तन, मन , धन लुटाया तो जीव सन्तों की वाणी सुन कर सन्तों के पीछे लगे। यह विश्वास करके कि सन्त इस अनगढ़िया देवा या अन्तिम पद पर पहुँचा देगे। इसलिए लोगों ने सन्तों की सेवा की। मैंने सन्त बन कर के देख लिया, गुरु बन कर देख लिया।

मेरे अनुभव ने सिद्ध किया कि किसी सन्त ने किसी पुस्तक में जीवों को सच्चाई प्रगट नहीं की। सबने गोपनीय रखा और जीव जीवन भर उनके पीछे लगे रहे। कोई सारे जीवन मन्दिर में आरती करता मर गया, कोई जुबान से राम-राम जपता मर गया, कोई जीवन भर गुरु की सेवा करता मर गया। यह मैं दर्देदिल की आवाज़ दे रहा हूँ।

मुझे सन्त मत के रहस्य– काल मत, दयाल मत और माया मत की समझ नहीं आती थी। मैंने इस समझ को प्राप्त करने के लिए दाता दयाल से अत्यंत प्रेम किया ताकि मैं भी उस अवस्था या पद तक पहुँच जाऊँ। दाता दयाल ने भी मुझको संकेत किये, स्पष्ट शब्दों में नहीं कहा। मुझे इस मंजिल या अवस्था तक पहुँचने के लिए मुझसे एक खेल खिलाया। सन्त बना दिया, सतगुरु मशहूर कर दिया, पुस्तकों में लिख दिया। आप लोगों ने मुझे सन्त समझ कर मेरा ध्यान किया, मेरी पूजा की, सेवा की। जब सत्संगियों के अनुभव मेरे सामने आये उस समय मुझको इस सन्तमत का विश्वास हुआ। क्या विश्वास हुआ? लोगों के अन्दर मेरा रूप प्रकट होता उनको दवा बताता, उनकी सुरत चढ़ाता, मरते समय साथ ले जाता आदि-आदि मगर मुझे पता नहीं होता। इस एक ख्याल ने मुझको उस अनगढ़िया देवा का पता दिया। कैसे!

मैं जिन्दा होशियारपुर में बैठा हुआ होता हूँ और हजारों आदमी मेरा ध्यान करते हैं और उनकी मनोकामनायें पूर्ण होती हैं। हाल की घटना है कि चार दिन हुये टूँडला से एक आदमी की चिट्ठी आई लाल स्याही की लिखी हुई । वह लिखता है कि बाबा जी! हम आपसे परिचित नहीं थे। मेरी माँ छः सात वर्ष से पेट के दर्द से बीमार रहती थी। आपके एक सत्संगी ने मेरी माता को आप की कुछ पुस्तकें और फोटो दिया और कहा कि बाबा का ध्यान किया करो आराम हो जायेगा। उसने मेरा ध्यान 40-50 दिन किया। उसका दर्द जाता रहा। फिर वह लिखता है कि मेरे

पिता को बाँह में तीन–चार वर्ष से फोड़ा था। दो बार आपरेशन कराया मगर ठीक नहीं हुआ। जब माँ का दर्द जाता रहा तो उन्होंने भी ध्यान करना शुरू किया। वह लिखता है कि उनको फोड़ा भी ठीक हो गया। वह आगे लिखता है कि मैं बी. ए. में पढ़ता हूँ। मैंने भी आपका ध्यान करना शुरू किया। अंग्रेजी का इम्तिहान था। जिस दिन इम्तिहान था स्वत: ही पाँच सवाल याद किये और उसमें से चार आ गये मुझे इसका कोई पता नहीं और न मैं उसको जानता हूँ।

परागपुर के डॉ. संतराम का खत मैंने 'मनुष्य बनो' में छपवाया है। उसने लिखा कि मैं बीमार था। मेरी स्त्री ने आप का फोटो रख के 2 घंटे प्रार्थना की। आप आये आपने कहा–यह सोटी देता हूँ। इसको अपने मकान में रख छोड़ तू बच जायेगा। वह ठीक हो गया। उसके लड़के की भी यही दशा है। इसके लड़कियाँ थी, लड़का नहीं था। उसने फोटो सामने रख के प्रार्थना की कि लड़का हो जाये। वह कहता है कि वीरेन्द्र को स्वप्न हुआ। एक बच्चा था। 11/– रू. उसके हाथ में थे। मैंने कहा 11/– रु. मुझे दे दे तू इस के घर चला जा। उसके लड़का हो गया। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य का सहायक उसका अपना ही मन है। अपनी आत्मा है। तुम्हारा मन ही ब्रह्माण्डीय मन के अंश है।

जो पिंडे सो ब्रह्माण्डे।

सब कुछ मनुष्य के अन्तर है। जिसकी जैसी प्रबल भावना या प्रबल चाह है उसके अनुसार उसको सब कुछ मिलता है या बिगड़ता है।

मैं अपने कर्म भोग वश अपनी ड्यूटी पूरा करने के लिए यह काम करता हूँ और कहना चाहता हूँ कि ऐ मानव जाति! तुझे जो कुछ मिलना है, मिल चुका है या आगे मिलेगा वह तेरी अपनी ही वासना, तेरा अपना ही ख्याल है। इसलिए हमारे ऋषियों ने वेदों में शिव संकल्प मस्तु का नियम बनाया हुआ है कि हमेशा कल्याणकारी विचार रखो।

इस समय भारतवर्ष में घरेलू रूप से, पोलीटिकल रूप से और सामाजिक रूप से मनुष्यों के मन में जो विचार उठते हैं उनमें घृणा, द्वेष, पराया पन है। भाई–भाई का शत्रु है। स्त्री पुरुष की नहीं बनती–सास बहू की नहीं बनती, बाप–बेटे की नहीं बनती। वह जो अनबन के विचार हमारे अन्तर से निकलते रहते हैं यह हमारे दुखों का कारण बनते हैं।

चूँकि मेरे जिम्मे ड्यूटी है मैंने आवाज दी है कि घरों में शान्ति रखो। प्रेम का जीवन व्यतीत करो। एक दूसरे के हितैषी बन के रहो। अपने स्वार्थ के लिये जो दूसरों का बुरा चाहते रहते हो, दूसरों से द्वेष रखते हो, यह तुम्हारे जीवन में तुम्हारे और तुम्हारे परिवार के लिए घातक है।

राष्ट्रीय रूप से देखो! इस समय पार्टियाँ बनी हुई है– जन संघ, कांग्रेस सोशलिस्ट, अकाली आदि। यह सब चुनाव के समय क्या करते हैं? इनके अन्तर से द्वेष के भाव निकलते हैं घृणा के भाव निकलते हैं। गैरियत निकलती है। मेरा अनुभव मुझे यह कहता है कि इस माया देश या मनोमय जगत में संकल्प ही प्रधान है। चूँकि मानव–जाति के संकल्प शुद्ध नहीं है इसलिए इसका परिणाम भारत वर्ष तथा मानव जाति को हानिकारक सिद्ध होगा। हो रहा है और भविष्य में भारत तथा विश्व के अन्दर न जाने क्या कुछ उपद्रव होंगे।

यह मैं जेठ मास का सन्देश देना चाहता हूँ– जब कोई आदमी घंटे दो घंटे मेरे रूप के आगे या किसी और गुरु के आगे या राम के आगे प्रार्थना करके उस रूप के सहारे अपनी वासना को तीव्र कर के अपनी इच्छा शक्ति को बढ़ा कर अपना काम बना सकता है तो यह तुम्हारे वर्तमान विचार और भाव भी रंग लायेंगे और ला रहे हैं। भारतवासी ही इसके जिम्मेदार हैं। स्वामी जी ने जो लिखा है वह ठीक लिखा है–

बिन सतगुरु सब धोखा खाया॥
कुछ हाथ न उनके आया,
बिन सतगुरु भटका खाया॥

वह कहते हैं कि सतगुरु के बिना कुछ हाथ नहीं आया। फिर सतगुरु कौन हुआ? सतगुरु है ज्ञान, सच्ची समझ का नाम, सच्चे विवेक का नाम। यह जब मिलेगा तुमको ऐसे पुरुष से मिलेगा जो मेरी तरह निर्बन्ध, निस्वार्थ है, गुणातीत है मगर मैं अहँकारी नहीं हूँ।

आजकल के जितने गुरु महात्मा है तुमको यह विश्वास दिलाते हैं कि कुछ न करो, हम या गुरु आ के तुमको अन्त समय में ले जायेंगे। लोग मरते हैं मेरा रूप आता है और ले जाता है मगर मैं तो जाता नहीं। मुझे पता भी नहीं होता। क्या इन महात्माओं ने तुम लोगों के साथ सत्यता से काम लिया है? तुम लोग कैसे आशा कर सकते हो कि इस प्रकार के महात्माओं से तुम्हारा कल्याण होगा। वह तो बात को पर्दे में रखते हैं अपने डेरे या धाम के लिये तथा अपने मान ओर धन के लिये। लोग कहेंगे मैं खंडन करता हूँ। हाँ मैं खंडन करता हूँ। जिस सिद्धान्त के अनुसार स्वामी जी ने वेद व्यास, पाराशर, वशिष्ट को अधूरा बताया, जिस सिद्धान्त के अनुसार कबीर ने कहा कि रामकृष्ण के भरोसे मत रहो, उन्होंने मुक्ति नहीं पाई। इसी सिद्धान्त के अनुसार मैं कहता हूँ कि इस समय का जितना गुरुइज्म हैं जो दुनिया को यह बताकर कि हम तुम्हारे अन्तर जाते हैं, स्वप्न में, तुमको मरते समय ले जाते हैं, यह गलत है। स्वामी जी ने खण्डन तो कर दिया मगर उसका कारण नहीं बताया या वह भेद नहीं बताया। उन्होंने खण्डन करके हमारा दिल दुखाया। जो राम के, कृष्ण के, वेद व्यास तथा वशिष्ठ के विश्वासी थे उनको दुख पहुँचा क्योंकि उनका अन्ध विश्वास था। उन्होंने जिस सिद्धान्त के आधार पर खण्डन किया उसको दुनिया के सामने प्रस्तुत नहीं किया।

जीवों को मुक्ति नहीं चाहिये। उनको संसार चाहिये। मैं ऐसे लोगों को कहता हूँ कि तुम चाहे जिस धर्म के हो चाहे जिस गुरु या देवता को मानते हो, उसे यह मानो कि वह एक ब्रह्माण्डीय शक्ति है। वही राम, कृष्ण, वही मुहम्मद, वही देवी, वही बुद्ध, जैन है। तुमने अपने विश्वास को पूरा करने को सहारा लिया है। यह तुम्हारी इच्छा है कि तुम चाहे मन्दिर का सहारा लो चाहे किसी और का। तुम्हारे विश्वास की शक्ति जितनी बलवान होगी, उसी के अनुसार तुम्हारा काम बन जायेगा, मगर यदि तुम यह चाहो कि तुम असली मालिक को मिल जाओ तो तुम नहीं मिल सकते। राम, कृष्ण, बाबा फकीर, सावनसिंह या दाता दयाल के ध्यान करने से तुम मालिक के घर नहीं जा सकते क्योंकि वह जो रूप बाबा फकीर, राम, कृष्ण आदि का बनता है वह तो तुम्हारे मन के अथवा मन के संकल्पों के कारण बनता है। यही बात कबीर ने पहिले शब्द में कही है कि ऐ मानव! तेरे अन्तर ही सात समुद्र हैं, समस्त देवी-देवता है।

मैंने तुमको सिद्ध कर दिया कि मैं किसी के अन्दर नहीं जाता। यह प्रोफैसर भगतराम (धर्मशाला निवासी) बैठा हुआ है। जब मैं इसके यहाँ गया, इसने मेरा सत्संग सुना। यह शाम को अभ्यास में बैठा। यह कहता है कि बड़ा भारी प्रकाश हुआ। अन्तर में मैंने सहायता की। बैशाखी के सत्संग के बाद जब वापिस गया तो वहाँ भी उसके साथ यही घटना घटी यदि मैं पर्दा रखता तो जो चाहे उससे ले लेता। यह सरदार बैठा हुआ है। इसके लड़के पर कत्ल का मुकदमा चला। यह कहता है कि आप सैशन जज के पीछे बैठे हुए थे। वह बरी हो गया। अब मैं तो था नहीं। इस प्रकार के भ्रमों में रख कर निबल-अबल और अज्ञानी जीवों से चाहे जो ले लेता। इसलिए मैं जेठ के महीने में सच्चाई की घोषणा किये जाता हूँ। यह ज्ञान जो मैं दे रहा हूँ यह न तो राधास्वामी दयाल ने स्पष्ट रूप से दिया और न सन्त कबीर ने दिया, न दाता दयाल ने दिया, न

बाबा सावनसिंह ने दिया। केवल इशारे सब कर गये। किसी के भाग्य में हुआ उसने समझा। किसी ने नहीं समझा। इस अज्ञान में रख कर कि अन्त समय में गुरु ले जायेगा किसी ने जायदाद बना ली, किसी ने डेरा धाम बना लिया। यह समझ कर कि राम या कृष्ण सहायता करता है तो राम और कृष्ण के मन्दिर अयोध्या और वृन्दावन में बन गये। स्वर्ग आश्रम खुल गये। यह जेठ के महीने का सन्देश है। क्यों देता हूँ? क्योंकि मेरे नाम दाता की आज्ञा है–

तू तो आया नर देही में, धर फकीर का भेषा।
दुखी जीव को अंग लगा कर, ले जा गुरु के देसा।
तीन तपा से जीव दुखी है, निबल अबल अज्ञानी।
तेरा काम दया का भाई, नाम दान दे दानी॥

दूसरा मेरा अनुभव है। यह जो मैं वचन कहता हूँ मेरा यही नाम दान है। जिसके भाग्य में है वह मेरी बात को सुन कर साधक बन जाये। जिसके भाग्य में नहीं है उसके लिये मैं क्या करूँ? मेरे वश की बात नहीं।

मैं यह भेद देता हूँ जिसके आधार पर स्वामी जी ने सब का खण्डन किया। वह क्या है?

वह यह है कि जो कुछ भी हमारे अन्तर फुरना होती है चाहे अच्छी या बुरी, सब माया है। तुम्हारे अपने मन के संकल्प हैं। इस दुनिया में रहते हुए यदि तुम्हारा कोई सहायक है तो वह वेद मार्ग है जिसका तत्व है– 'शिव संकल्प मस्तु'। अपना, अपने परिवार का तथा मानव जाति का भला चाहो।

जितने रूप रंग मेरे अन्तर प्रगट होते थे, इसका मुझे विश्वास हो गया कि यह माया है, कल्पित है। अब मैं इससे आगे जाने को विवश हो

गया। मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार तुम्हारी आत्मा से पैदा होते हैं। आत्मा प्रकाश स्वरूप है। अपने–आपको प्रकाश में ले जाना ही धर्म है। यदि कोई व्यक्ति इस दुनिया में सुखी रहना चाहता है उसके लिये ऋषियों का सन्देश है '**शिव संकल्पमस्तु**'। अच्छे विचार रखो। किसी के साथ ईर्ष्या द्वेष मत रखो, बाँट कर खाया करो। यह है जीने के रहस्य। यदि इससे पार जाना चाहते हो तो अपने अन्तर साधन करके प्रकाश को प्रगट करो। यह जो मन है अथवा संकल्प विकल्प है यह प्रकाश से पैदा होते हैं। बनस्पति, कीड़े–मकोड़े, सूर्य की किरणों से उत्पन्न होते हैं। इसी तरह वह जो ब्रह्म है और पारब्रह्म है उसकी किरणों से ही यह सूर्य चन्द्र सितारे बने हुए हैं। उसकी किरणें यहाँ है। प्रकाश को भी तो किसी ने बनाया है। प्रकाश स्वयं मालिक नहीं है। प्रकाश जब होगा, किसी वस्तु से पैदा होगा दो वस्तुओं की रगड़ से होगा। मालिक है परम तत्व आधार, जिसके विषय में आज दिन तक किसी पीर पैगम्बर, ऋषि–मुनि को पता नहीं लगा कि वह क्या है?

जो भी ढूँढने निकला वह चुप कर गया। ढूँढने वाली जो सुरत है वहाँ वह भी लय हो जाती है, तो उसके बारे में कोई क्या कहेगा? इसी लिये संत कहते हैं कि वह अकह अपार, अगाध अनामी हैं। उसकी कोई सेवा पूजा नहीं कर सकता। वह तो निजस्वरूप है जात है, तत्व है। उसकी सेवा पूजा कौन करेगा? उसकी सेवा यही है कि उसका अंश जो हर एक जीव में यहाँ आया हुआ है उसकी सेवा की जाये अर्थात् मनुष्य मनुष्य की सेवा करे। वह तो आधार है कूटस्थ है। उसका न किसी ने अन्त पाया न पा सकेगा। उसकी सेवा कौन कर सकेगा?

यदि उसकी सेवा करना चाहते हो तो ऐ मानव! मानव की सेवा कर मगर तुम सारी सृष्टि की तो सेवा नहीं कर सकते। अतः जिसको कुदरत ने तुम्हारे साथ लगाया है– बूढ़े माँ–बाप हैं, विधवायें हैं, अनाथ बच्चे हैं

उनकी सेवा करना ही मालिक की असली सेवा है। यह मेरी समझ में आया है।

जो कुछ मैंने समझा उसके आधार पर कहता हूँ कि मन्दिर तीरथ की पूजा एक मानसिक सहारा है। सबसे उत्तम सेवा यही है कि मनुष्य मनुष्य की सेवा करे। यदि यह पूजा दुनिया में आ जाये तो दुनिया में सब मुसीबतें समाप्त हो जाये।

यह भेद है जो सतगुरु की हैसियत में संसार को दिए जा रहा हूँ। स्वामी जी ने कहा है–

बिन सतगुरु भटका खाया।

सत्गुरु है सार ज्ञान, सार शब्द। पूर्ण ज्ञान का नाम ही सतपुरुष है। जिसने सतपुरुष को जान लिया उसका बेड़ा पार है। बिना सच्चे ज्ञान के हम सब धोखा खा रहे हैं। यह मनोमय जगत है। यहाँ संकल्प काम करता है। इस दुनिया में रहते हुए अपने संकल्प व विचार को ठीक करो। विचारों को ठीक करने के लिए सबसे पहिले सत्संग करो। इससे सच्ची समझ–बूझ मिलती है **'गुरु महिमा'** नामी पुस्तक में मैंने कबीर साहब की एक कड़ी की व्याख्या की है। वह कड़ी है–

चल सतगुरु की हाट, ज्ञान बुद्धि लाइये।
कीजै साहब से हेत, परमपद पाइये॥

सत्गुरु की दुकान पर समझ–बूझ या ज्ञान मिलता है। क्या ज्ञान मिलता है? यही कि तुमने दुनिया में कैसे जीना है। साथ ही इस संसार में पार जाने का रास्ता मिलता है। हमारे ऋषियों ने जहाँ शिव संकल्प रखने पर जोर दिया है। वहाँ अपने अन्तर में सावित्री के दर्शन करने पर जोर दिया है। 9 वर्ष के बच्चे को गायत्री मंत्र द्वारा यही आदेश दिया गया है मगर बात यह रही कि हर एक पुरुष ने जिसने कोई पंथ चलाया उसने

अपने बड़प्पन के लिए, अपना सर्वाधिकार (Monopoly) रखने के लिए सबका खंडन कर दिया। अपनी–अपनी जगह पर सबकी मुख्यता है। जैसे पहिले मैं गिल्ली डंडा खेला करता था। समय आया वह छूट गया। अपने आप खण्डन हो गया। पोतों के लिए अब गेंद, हवाई बन्दूक ले जाता हूँ। विवाह हुआ मगर समय आया जब स्त्री का भी ख्याल छूट गया। खण्डन समय पर स्वयं हो जाता है। किसी का खंडन करना गलत है। इस खंडन ने हमको एक दूसरे से अलग कर दिया। स्वामी जी ने खण्डन तो किया मगर प्रमाण नहीं दिया। परिणाम यह निकला कि थोड़े बहुत आदमी राधास्वामी मत में आये मगर दूसरे विरोधी हो गये। अब गद्दियाँ बन गईं। कोई कहता है अमुक गुरु पूरा है, कोई कहता है वह गुरु पूरा है। अब आपस में द्वेष घृणा हो गई। जिस द्वेष और गैरियत को मिटाने को सन्तमत दुनिया में आया था वह और बढ़ गई। क्यों बढ़ी? इसलिए कि इस वक्त कोई सत्गुरु है नहीं।

यदि मैं ने भी यही काम करना होता तो मुझको नई दुकान खोलने की क्या आवश्यकता थी। चूँकि आम जनता इसकी अधिकारी नहीं थी इसलिए ऋषियों ने शब्द योग को उपनिषदों तक ही सीमित रखा। 11 वर्ष के बच्चे लिये तो वही शिक्षा होगी जो उसके विचारों के अनुसार है। इसलिए उन्होंने खोला नहीं अन्यथा गरुड़ पुरण में स्पष्ट लिखा है कि जो व्यक्ति अपने घर जाना चाहता है, धर्मराज और चित्र गुप्त से बचना चाहता है उसको चाहिये कि वह पारब्रह्म और शब्द ब्रह्म से आगे जाये अन्यथा उसे वह घर नहीं मिलेगा। वह जो शब्द ब्रह्म से आगे का देश है वह है–

एक पुरुष अजायब पाया।

वह है अनगढ़िया देवा। शब्द और प्रकाश भी गढ़ा हुआ हैं। प्रकाश और शब्द जब होगा किसी वस्तु को गति या रगड़ से होगा। इसलिए

अनगढ़िया देवा और अजायब पुरुष कौन है? जो शब्द और प्रकाश से परे है। क्या स्वामी जी ने झूठा लिखा है?

एक पुरुष अजायब पाया।
कोई मर्म न उसका गाया॥

क्या आज ऐसी शिक्षा कहीं है कि उस मालिक को पूजो जो शब्द से परे हैं। कोई उसे सगुन बताता है, कोई प्रकाश और कोई शब्द। वह न पारब्रह्म है, न शब्द ब्रह्म है। वह क्या है? वह जो है सो है। वह है एक अजायब पुरुष। मैं उस पुरुष अजायब में जाता रहता हूँ मगर अफसोस! वहाँ ठहर नहीं सकता। यह मेरे वश में नहीं है। इसीलिए मुझे नीचे आना पड़ता है।

जिस पर दया आदि कर्त्ता की, वह यह नियामत पावे॥

कोई अपने वश में नहीं है। स्वामी जी कहते हैं– बिन संत हाथ नहीं आया। सन्त तुमको कैसे बतायेगा? क्या फूँक मारकर ले जायेगा? नहीं। इन बातों को पढ़ कर दुनिया पागल हो गई है। तुम सन्त की संगत करके, बात को समझ कर बुद्धि निश्चयात्मक करके वहाँ जा सकते हो। भ्रम में आकर दुनिया लुट गई। मैंने देखा कि दुनिया लुट गई तो मैंने सच्चाई को प्रगट कर दिया। अपने वचनों से सच्चा ज्ञान देता हूँ मगर उसके अधिकारी बहुत थोड़े हैं। छोटे बच्चों को कहो कि वह (Automemory) स्वयं स्मरण का पाठ पढ़ाये। क्या पढ़ा सकेगा? नहीं। क्योंकि उसका दिमाग विकसित नहीं हुआ। हर बात का समय होता है।

बिन सन्त हाथ नहिं आया।
ऋषि मुनि सब धोखा खाया॥

जब मैं यह वाणी पढ़ा करता था मेरे हृदय में आग जला करती थी। टेकी अब भी हूँ, मगर अब अज्ञान का टेकी नहीं रहा। मैं बताता हूँ ये

क्यों भूले। जितने रूप रंग प्रगट होते हैं यह सब तुम्हारे अपने मन का खेल है। यदि इससे बचना चाहते हो तो सतगुरु से सतज्ञान लो। पहिले चित की वृत्ति को एकाग्र करो, फिर प्रकाश में जाओ व शब्द में जाओ। फिर उस वस्तु की खोज करो जो शब्द और प्रकाश में रहती हुई प्रकाश को देखती और शब्द को सुनती है। वह जो वस्तु है वह है अजायब पुरुष। तुम स्वयं उस अजायब पुरुष की अंश हो। वह अजायब पुरुष ही हर एक जीव के रूप में आया हुआ है। मगर बिना सतगुरु के उसको अपने घर का पता नहीं।

हो सकता है स्वामी जी का अजायब पुरुष कोई और हो। स्वामी जी या कबीर होते तो मैं उनसे पूछता कि तुमने अपनी वाणी रच दी। हम वाणी पढ़-पढ़ के न इधर के रहे न उधर के रहे। जिन्होंने विश्वास कर लिया वह पीछे लग गये। जो अजायब पुरुष है वह अनगढ़िया देवा है। हमारी सुरत उसकी अंश है जो इस शरीर में आई हुई है। हम अपने घर को भूल गये। जब सतगुरु मिला तब उसने हमको ज्ञान दिया अथवा अपने घर का पता बताया।

तुम गृहस्थी हो, ऊँचे मालिक तक नहीं जा सकते। तुमको एक बात बताये देता हूँ। तुम लोग इस दुनिया में रहते हुये कल की परसों की चिन्ता करते रहते हो, अशान्त हो, दुखी रहते हो। दुनिया में जो कुछ हमारे साथ होता है यह सब हमारे ही कर्मों का फल है। यदि दुख-सुख आता है तो यह समझ करके कि हमारे पिछले जन्मों के कर्म हैं धैर्य से सहन करो।

अब तुम लोग संतों को मानते हो। कबीर आदि संत हुये हैं। वह तो उसी शब्द में, जिसकी एक कड़ी की व्याख्या मैंने 'गुरु महिमा' नामी पुस्तक में की है। कहते हैं कि शुभ और अशुभ कर्मों को कोई काट नहीं सकता। फिर तुम किसी महात्मा के पास जाकर क्यों प्रार्थना करते हो कि

तुम्हारा दुख दूर हो जाये। सोचो! कबीर के अनुसार वह कर्म जो तुम ने किये हैं वह तो तुमको भोगने पड़ेंगे। कर्म क्या है? शुभ और अशुभ वासना। यह ऋण बद्ध संसार है। यहाँ कोई पुत्र-पुत्री बन कर लेता है कोई गुरु बनकर लेता है, कोई चोर बनकर लेता है, कोई ठग बन कर लेता है। जो कुछ किसी ने बनना है वह पहिले ही बन कर आया है। ऐसा समझ कर शान्ति प्राप्त करना संतों का मार्ग है। दुख-सुख आते हैं। किस लिये चिन्ता करते हो। धैर्य रखो। खुश रहो और अपनी ड्यूटी पूरा करो। बस। तुमको नुक्ता बता दिया।

तुम सत्संग करने आते हो। तुमको सच्ची समझ देता हूँ। शान्ति रखो।द ुख-सुखअ ाके च लेज ातेह ैं ाय दित ुमम ें श्र ाद्धाह ै,इ तना विश्वास है तो तुम्हारा दुख भी सुई का काँटा हो जायेगा, क्योंकि तुम्हारे ख्याल से ही दुख हुआ है। यदि तुम अपने संकल्प को बदल दो तो तुम्हारी सूली काँटा हो जायेगी क्योंकि यह संकल्प की दुनिया है। तुम्हारे विचार ने कर्म बनाये हुये हैं। Anti (विपरीत) संकल्प ले लो कर्म कट जायेंगे।

यदि तुम अपनी डोरी उस मालिक पर छोड़ दो, बाबा फकीर पर नहीं, जो सबका आधार है तो तुम्हारे दुख रूपी सूली के काँटे हो जायेंगे। **विश्वासम् फल दायकम्।** उस मालिक का भरोसा रखो। यह नहीं कि फकीर चन्द पर भरोसा रखे। फकीर चन्द की ड्यूटी तो इतनी ही है कि तुमको सच्चा ज्ञान दे दे। मैं तुम लोगों को अपने पीछे लगा कर अपनी आत्मा का खून नहीं करना चाहता। तुमको सत ज्ञान देता और सच्ची बात बताता हूँ। शेष जो कुछ करने वाला है वह मालिक है या तुम्हारे कर्म हैं।

सत्संग में आकर तुमको शान्ति मिलनी चाहिये। किसी उद्देश्य के लिए कोई सत्संग करता है। मुझे भी दुख सुख आ जाते हैं। अपने ही

आप उनके दूर होने का साधन होता रहता हो। श्रद्धा विश्वास रखो। किसी वीत राग पुरुष का ध्यान किया करो। उसकी रेडीयेशन लिया करो। रेडीयेशन का नियम काम करता है। जो वासना तुम्हारे अन्तर है तो वह पूर्ण होनी चाहिये। तुम्हारे ध्यान की शक्ति काम करती है। मैं जो कुछ कर सकता हूँ वह तुमको सत्संग में बता दिया और उसका गुरू बता दिया। सच्चे हृदय से चाहता हूँ और दाता दयाल से प्रार्थना करता हूँ कि जो लोग जिन-जिन भावों से आते हैं उनकी मनोकामनाये पूर्ण हों। गुरु मत है ज्ञान का नाम। बात को समझो। अपने मन पर कंट्रोल करो। बात को समझ कर उस पर विचार करो और अमल करो। अमल करने से तुम्हारा मन तुम्हारे काबू में आयेगा।

मेरी शिक्षा को ग्रहण करके अपने मन को काबू में रख कर चलो। तुम में सब कुछ है। भूल जाओ कि गुरु होशियारपुर में रहता है। गुरु तुम्हारे दिल में रहता है। गुरु को फकीर चन्द मत समझो। गुरु आदर्श है, तुम्हारा इष्ट है और तुम्हारे अन्तर रहता है, 24 घण्टे साथ समझो! सोते-जागते हर समय वह तुम्हारा रक्षक है। यदि तुम में यह समझ आ जायेगी, तुम्हारी रक्षा होती रहेगी। बाहर के गुरु की ड्यूटी है कि यह निश्चय करा दे कि गुरु तुम्हारे अन्तर है। जो कुछ है तुम्हारे अन्तर है। बाह्य गुरु का अहसान यही है कि भ्रम और बाहर मुखता को छुड़वा कर अन्तर मुखी बना दे।

सबको शान्ति।